



उज्याऊ

चतुर्थ अंक 2020



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र, देहरादून



गृह-पत्रिका 'उज्याळ' (चतुर्थ अंक)

वर्ष 2020

संरक्षक

श्री श्याम वीर सिंह

निदेशक, राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

सम्पादक मण्डल

श्री पंकज कुमार

डी० एस० एस०

श्री के० के० शुक्ला

अधिकारी सर्वेक्षक

श्री अरुण कुमार

तकनीकी अधिकारी

श्री एस० एस० रावत

मानचित्रकार श्रेणी-1

श्रीमति सीमा सिंह

वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन

सम्पादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है क्योंकि रचनाओं में व्यक्त किये गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं।

ले जनरल गिरीश कुमार, वी.एस.एम. (सेवानिवृत्त)
Lt General Girish Kumar, VSM (Retd.)

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India



भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबडकला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37
देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.- 37
Dehradun - 248001, (Uttarakhand), India



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी है कि राष्ट्रीय-भू-स्थानिक, आंकड़ा केन्द्र अपने कार्यालय की हिन्दी गृह-पत्रिका 'उज्याऊ' के चतुर्थ अंक को प्रकाशित करने जा रहा है। यह राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की भी हिन्दी के प्रति निष्ठा, प्रेम एवं रुचि को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का एक सराहनीय प्रयास है।

हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है अतः हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए निरन्तर प्रयास करना हम सबका दायित्व है। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किया जा रहा प्रयास निदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी के प्रयोग के प्रति उनकी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका के प्रकाशन से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास भी होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए इस पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(ले० जनरल गिरीश कुमार)
वी०एस०एम० (सेवानिवृत्त)
भारत के महासर्वेक्षक,



दूरभाष/Telephone 0135 2741428
0135 2742015
फैक्स/Fax 91-135 2742826
ईमेल/E-mail: zone.spl.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
(www.surveyofindia.gov.in)



अपर महासर्वेक्षक, विशिष्ट क्षेत्र का कार्यालय
OFFICE OF ADDITIONAL SURVEYOR
GENERAL, SPECIALIZED ZONE
ब्लॉक 6, हाथीबड़कला एस्टेट, पत्र पेटी सं. 200
Block 6, Hathibarkala Estate, Post Box No. 200
देहरादून-248001, (उत्तराखण्ड)
Dehra dun-248001, (Uttarakhand)



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र की गृहपत्रिका "उज्याऊ" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है।

हिन्दी भारत में राजभाषा होने के साथ-साथ सर्वग्राही है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार हेतु हिन्दी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन एक सराहनीय व सार्थक कदम है। मनोभावों, विचारों तथा सूचना के परस्पर विनिमय हेतु भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। लिपि भाषा को भौतिक स्वरूप प्रदान करती है। राजभाषा हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं सरकारी कामकाज में हिन्दी का आधिकाधिक प्रयोग करना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्य भी है क्योंकि प्रत्येक समाज एवं राष्ट्र की आत्मा एवं संस्कृति उसकी भाषा में निहित होती है।

"उज्याऊ" पत्रिका का प्रकाशन अधिकारियों/कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी में लेखन के प्रति रुचि को प्रदर्शित करता है। गृह पत्रिकाएं अधिकारियों/कर्मचारियों में लेखन के प्रति छिपी हुई प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए एक सुविधाजनक एवं सशक्त मंच प्रदान करती हैं। सरल एवं सुबोध भाषा में लिखे गये तकनीकी लेख, पाठकों को हिन्दी में लेखन की रुचि बढ़ाने के साथ-साथ भारतीय सर्वेक्षण विभाग की गतिविधियों से भी अवगत कराएंगे।

मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

नवीन तोमर

(नवीन तोमर)

अपर महासर्वेक्षक, विशिष्ट क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

SURVEY OF INDIA



दूरभाष/ 0135 2747623
Telephone 0135 2742015
प्रतिकृति/Fax: 91-135-2742971
E-mail: ngdc.soi@gov.in



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र
NATIONAL GEO-SPATIAL DATA CENTRE
ब्लाक 6, हाथीबड़कला एस्टेट, पत्र पेटी सं. 200
Block 6, Hathibarkala Estate, Post Box No. 200 देहरादून
(उत्तराखण्ड) Dehra Dun- 248001 (Uttarakhand)



संदेश

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के देहरादून स्थित राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका "उज्याऊ"-2020 का निरंतर चतुर्थ अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हमारी राजभाषा होने के साथ ही भारत जैसे विशाल बहुभाषी राष्ट्र को एक मंच पर लाने में हिंदी की अहम भूमिका रही है। गृह पत्रिकाओं का राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रिकाएं हमारे विचारों एवं भावों को प्रभावशाली ढंग से प्रकट करने में सहायक सिद्ध होती हैं इसलिए यह हमारा नैतिक दायित्व है कि हम संवैधानिक दायित्वों के साथ-साथ अपने दृढ़ प्रयासों से राजभाषा हिंदी को पूर्ण सम्मान दिलाएं।

मैं पत्रिका की निरंतरता बनाए, रखने के लिए "उज्याऊ" चतुर्थ अंक से जुड़े संपादक मंडल, रचनाकारों तथा साथ ही साथ प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों को उनके सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई व शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(एस० वी० सिंह)

निदेशक,

रा० भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र देहरादून

सम्पादकीय



रा० भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र देहरादून की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'उज्याऊ' के चतुर्थ अंक अपने सुधी पाठकों के हाथों में सौंपते हुये मुझे पूर्व की भांति ही अत्यन्त हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिन्दी हमारी सम्पर्क भाषा होने के साथ-साथ भावनाओं की अभिव्यक्ति को काफी सरल बनाती है। 'उज्याऊ' पत्रिका राजभाषा हिन्दी के गौरव में उत्तरोत्तर वृद्धि में सदा सहायक रही है, और चतुर्थ अंक भी हमारा यही प्रयास है। राजभाषा के प्रति असीम सम्मान और दायित्व को प्रकट करते हुए हमारे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में विचारों के मोती चुनकर शब्दों की माला में पिरोया है।

पत्रिका के अनवरत प्रकाशन में रा० भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के निदेशक श्री श्याम वीर सिंह जी की दृढ़ इच्छा शक्ति का सदा ही योगदान रहा है। आपका राष्ट्रभाषा के प्रति असीम प्रेम एवं प्रेरणा से ही यह सम्भव हो पाता है जिसके लिए मैं आपकी अत्यन्त आभारी हूँ। साभार मैं अपने सम्पादक मण्डल के अधिकारी गण श्री पंकज कुमार, डी० एस० एस०, श्री के० के० शुक्ला, अधिकारी सर्वेक्षक, श्री अरूण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक, एस० एस० रावत, मानचित्रकार श्रेणी-1 का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने अति व्यस्तता और समयाभाव के बाद भी पत्रिका के प्रकाशन में निरंतर अपनी विवेकपूर्ण सलाह एवं मार्गदर्शन बनाये रखा।

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के दिनों में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अशांत है, मन खिन्न है परन्तु ऐसे कठिन पल में भी अपने कार्यालय की जिम्मेदारियों के साथ पारिवारिक जिम्मेदारी का पूर्ण निर्वहन करते हुए हमारे रचनाकारों ने बड़े ही उत्साह व लगन के साथ अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया है जो प्रशंसनीय है, मैं उन सभी का धन्यवाद करती हूँ।

सभी सुधी पाठकों के विचार तथा सुझाव अमूल्य है। आपके विचार, सुझाव और प्रोत्साहन भविष्य में पत्रिका को अधिक रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने में सहायक सिद्ध होंगे अतः आपके विचार सादर आमंत्रित है।

सीमा सिंह,
वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन
सम्पादक

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेख/कविता	लेखक	पृष्ठ संख्या
१	आध्यात्मिक मूल्यों का लोप'	सतेन्द्र सिंह रावत मानचित्रकार श्रेणी-1	8
२	मेरी बिटिया	अनुपमा ढौडियाल पत्नी श्री एम0 एन0 ढौडियाल	9
३	महिलाओं के सामाजिक उत्थान में महिला आरक्षण विधेयक की आवश्यकता	आई० एस० पुण्डिर मानचित्रकार श्रेणी-1	10
४	कोरोना से जंग	ममता तोमर, वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन	11
५	सर्दी	हर्षित लटोतरा, पुत्र ओम प्रकाश सर्वेक्षक	12
६	वक्त	ओम प्रकाश वरिष्ठ सर्वेक्षक	12
७	गुरुनानक देव जी के दस उपदेश अपनाए और अपने जीवन को सफल बनाए।	हर्षित लटोतरा, पुत्र ओम प्रकाश सर्वेक्षक	13
८	भोजन के प्रकार	शुभम खण्डूडी, पुत्र श्री सुभाष खण्डूडी	14
९	कोरोना वायरस पर हिन्दी में निबंध	अरुण सैनी, तकनीकी अधिकारी	15
१०	मेरा विश्वास मेरे माता-पिता	वैभवी चमोली, पुत्री श्री दुर्गा प्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक	17
११	दिल का दर्द	सुभाष, एम० टी० एस०	17
१२	उत्तराखंड का दर्द:- पलायन	विजय सिंह भण्डारी, कम्प्यूटर टाईपिस्ट	18
१३	पुष्प चित्र	वेदांशी चमोली, पुत्री श्री दुर्गा प्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक	20
१४	छोटा भीम चित्र	सात्विक गुप्ता, पुत्र श्री विवेक कुमार गुप्ता, अधि० सर्वे०	20
१५	भीमराव अम्बेडकर तथा बुद्ध का चित्र	दिव्यांश ढौडियाल पुत्र श्री एम०एन० ढौडियाल अधीक्षक सर्वेक्षक	21
१६	कोरोना वायरस पर चित्र	निर्मल सैनी, पुत्र श्री अरुण कुमार सैनी, अधि० सर्वे०	21
१७	साम्राज्यवाद का नाश हो	बृजेन्द्र सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	22
१८	गीतोपदेश	सार्थक गुप्ता, पुत्र श्री विवेक कुमार गुप्ता, अधि० सर्वे०	23
१९	उत्तराखण्ड का पाँचवा धाम "सेम मुखेम नागराजा"	हरीसिंह, मानचित्रकार श्रेणी-1	24
२०	"डिप्रेसन- चलो बात करें"	उपदेश कुमारी, वरिष्ठ सर्वेक्षक	25
२१	आपदा प्रबन्धन में भारतीय सर्वेक्षण विभाग की उपयोगिता	अरुण सैनी, तकनीकी अधिकारी	28
२२	नवनिर्माण	श्रीमती बबीता उनियाल, पत्नी श्री हर्ष प्रिय उनियाल	29
२३	भीष्मशय्या	(आलोक मिश्रा), वरिष्ठ सर्वेक्षक	30

२४	अंतर-गमन	हर्ष प्रिय उनियाल, भण्डार सहायक	31
२५	आत्म निर्भर भारत – चुनौतियां एवं सम्भावनाएं	कौशल किशोर शुक्ला, अधिकारी सर्वेक्षक	32
२६	प्रगतिपथ पर भारतीय सर्वेक्षण विभाग—(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी)	(गंभीर सिंह), सर्वेक्षण सहायक	34
२७	“असल की नकल” : व्यंग	कौशल किशोर शुक्ला, अधिकारी सर्वेक्षक	35
२८	चीन देश को दो टूक	अजय त्यागी, वरिष्ठ सर्वेक्षक	36
२९	डेंगू भइया	राकेश कुमार तनेजा, वरिष्ठ सर्वेक्षक	36
३०	पर्यावरण चेतना	श्री राजेश कांगा, अधिकारी सर्वेक्षक	37
३१	“श्रावण”—कजरी गीत	कौशल किशोर शुक्ला, अधिकारी सर्वेक्षक	37
३२	अनमोल सीख	सीमा सिंह, वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन	38
३३	वक्त	विजय सिंह, लोकल लेबर	40
३४	सावन की बेला	सीमा सिंह, वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन	41
३५	एक औरगंगूताई	अशोक सिंह, पति श्रीमती सीमा सिंह	42
३६	हार के आगे जीत	एम०एन० ढौडियाल, अधीक्षक सर्वेक्षक	45
३७	प्रकृति प्रेम	आत्रेय ज्ञान, वरिष्ठ सर्वेक्षक	46
३८	मिथिला पेंटिंग	पंकज कुमार, उप-अधीक्षक सर्वेक्षक	47
३९	कोरोना काल में डिजिटल युग का महत्व	विनीत शुक्ला, पुत्र कौशल किशोर शुक्ला, अधि. सर्वे.	48
४०	क्या आप जानते हैं?	संतोख सिंह, मानचिकार श्रेणी-1	49
४१	कोरोना काल	अशोक सिंह, पति श्रीमती सीमा सिंह	50
४२	फिलैटली: शौकों का राजा तथा राजाओं का शोक	श्रीजेश बाबू एन० टी०, कार्यालय अधीक्षक	51

आध्यात्मिक मूल्यों का लोप'



सतेन्द्र सिंह रावत
मानचित्रकार श्रेणी-1

आज का मनुष्य आत्याधिक भौतिकवादी तथा लालची हो गया है। बलिदान, त्याग, संतोष, प्रज्ञा, चिन्तन मनन, लोकातीत अनुभूति, मुक्ति तथा मोक्ष जैसे शब्द, जो कि आध्यात्मिक मूल्यों के द्योतक हैं, हमारे शब्दकोष से लुप्त हो चुके हैं। व्यापक उपभोगतावादी संस्कृति तथा भोग विलास से पोषित भौतिकवाद ने हमारी आध्यात्मिक चेतना पर पर्दा डाल दिया है। धन अर्जन, सत्ता तथा प्रसिद्धि की लालसा और सुखवादी जीवन प्रणाली आज जीवन का परम लक्ष्य बन चुका है।

सभी धर्मों ने लालच को महापाप कहा है। परन्तु आज लालच ही मुख्य प्रेरणा द्वार है। केवल सम्पत्ति प्रभुत्व वाले पूंजीवादी ही नहीं, अपितु तथाकथित समाजवाद की भी चिन्तन धारा लालच का ही अर्थात् अधिक खाद्य, पेय, कामुकता, सम्पत्ति, सत्ता तथा प्रसिद्धि का पोषण करती है। मनुष्य इस पर भी संतुष्ट नहीं है। उसका सामूहिक लालच हमारी इस सुन्दर धरती के दुर्लभ तथा अतुलनीय संसाधनों को लूट रहा है तथा समस्त मानव जाति को पर्यावरणीय विनाश तथा पर्यावरणीय विनाश तथा पर्यावरणघात के कगार की ओर ले जा रहा है।

सभी धर्म, धर्माचार्य, संत तथा ऋषि-मुनि आध्यात्मिक मूल्यों को सर्वोच्च महत्व देते हैं। हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक मूल्यों का अनुक्रम है धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष। अर्थ तथा काम सांसारिक मूल्य है। परन्तु धर्म का स्थान सर्वप्रथम है, यह अर्थ तथा काम दोनों का प्रेरक तथा शासक है।

निःसंदेह मोक्ष, जिसका अर्थ है सभी सांसारिक इच्छाओं तथा आसक्तियों से मुक्ति, सर्वोच्च मूल्य है। आध्यात्मिक तथा सांसारिक मूल्यों, ताओवाद के यिंग तथा यांग के सर्वोच्च संतुलन से एक ऐसा सामंजस्य स्थापित होता है जिससे जीवन अर्थपूर्ण तथा जीने योग्य बनता है।

जीवन के हिन्दू दृष्टिकोण के अनुसार सात्विक सर्वाधिक ऊँचा आदर्श है। इसके बाद राजसी का स्थान है, जो एक आदर्श नहीं परन्तु सामाजिक आवश्यकता है। तामसिक सबसे निम्न कोटि की तथा सबसे अधिक अपमानजनक वृत्ति है जिससे सभी बुद्धिमान दूर रहते हैं। मनु की पद्धति में सतत्व को न्याय की संज्ञा दी गयी है, राजस को आकांक्षा की तथा तमस को इच्छाओं की। गीता के अनुसार सतत्व प्रदीप्ति है, राजस मनोवेग है तथा तमस अज्ञान।

हिंदुओं की तरह यूनानियों तथा मध्ययुगीन ईसाइयों में भी इसी प्रकार के जीवन को सर्वोच्च महत्व प्रदान किया है जो चिंतन, मनन, ज्ञानोदय तथा सत्य की खोज प्रति समर्पित था। प्लुटार्क लिखते हैं कि अनादि-अनन्त का चिंतन-मनन दर्शनशास्त्र का उद्देश्य है, तथा रहस्यों का चिंतन-मनन धर्म का उद्देश्य है। यूनानियों के लिए दर्शनशास्त्र मनुष्य का सर्वोत्तम लक्ष्य है। अरस्तु के अनुसार किसी व्यक्ति की अन्तः शक्तियों को सार्थक बनाना ही सर्वोत्तम है, जिससे परितोष की भावना पैदा होती है तथा आनन्द की अनुभूति होती है। उन्होंने चिन्तन मनन को मनुष्य के परम आनन्द के रूप में देखा। मध्य युग के महानतम दर्शनशास्त्री टामस एक्विनास के लिए भी "आन्तरिक शान्ति तथा आध्यात्मिक ज्ञान के लिए समर्पित जीवन ही मानव गतिविधियों का सर्वोत्तम रूप है।"

आधुनिक युग के आगमन से ही आध्यात्मिक मूल्यों का लोप होना आरम्भ हुआ। इस युग का प्रमुख लक्षण है मानव व्यवहार की लौकिकता, व्यवहार कौशल, बुद्धि सम्पन्नता तथा प्रत्यक्षवाद। जिस बात की जांच नापतोल अथवा गिनती न हो सके, वह कभी भी आधुनिक पाश्चात्य मानव के जीवन का भाग नहीं बनी। अतः डा०आर०जी० लेंग के अनुसार "सौंदर्य बोध तथा नैतिक संवेदनाएं, गुणवत्ता, अनुभूतियां, आत्मा, चेतना, अन्तः करण" जैसे लक्षण लुप्त हो गए।

केबल टी०वी०, फैशन शो, इन्टरनेट, उन्मुक्त सामाजिक जीवन, क्लब संस्कृति, उन्मुक्त यौन सम्बन्ध और पाश्चात्य जीवन शैली गिरते मूल्यों के लिए जिम्मेदार है। आध्यात्मवाद तो दूर की बात है, आज के युवा अपने माता पिता को अपनी शिक्षा और विवाह के विषयों में कोई अधिकार नहीं देते हैं।

पवित्र कुरान में लिख है कि मां बाप अपनी संतान को जो सबसे मूल्यवान वस्तु देते हैं वह है शिक्षा, परन्तु आजकल के माता-पिता यह नहीं जानते कि वे किस प्रकार की शिक्षा का खर्च (अपने बच्चों के भविष्य की खातिर) निस्वार्थ भाव से कर रहे हैं। पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने की किसी को भी फुर्सत नहीं है। पूरा जोर खाने-पीने, मौज-मस्ती, रंगारंग कार्यक्रमों, नशा करने इत्यादि पर दिया जाता है। गुरुकुल प्रथा लगभग सामप्त हो चुकी है। ऐसे हालातों में अध्यात्मवाद की ओर रुचि किस नौजवान या नवयुवती में पैदा होगी ?

मध्यम आयु के लोग भी पैसा कमाने के लिए नौ से पांच की प्रणाली को गले लगा चुके हैं। उनके पास गीता, कुरान या बाइबिल पढ़ने का या सत्संग में बैठने का वक्त कहां? व्यवसायी लोग सुबह उठ कर अपने काम धंधों में लग जाते हैं और देर रात घर लौटते हैं। धन का जाल उनके चारों ओर कुछ इस तरह बुन गया है कि सत्य, अच्छाई और मर्यादा के सुविचार उन तक पहुंच नहीं पाते।

यदि इनमें से कुछ लोग अध्यात्मवाद में रूचि लेते भी हैं तो परिवार और मित्रों के दबाव में आ कर वे इस दिशा में मजबूरी से ही कोई कदम उठाते हैं, अपनी इच्छा से नहीं। और युवा वर्ग का तो कहना ही क्या? आधुनिक जीवन शैली के रंगों में रंगे ये युवक युवतियाँ नशों के द्वारा भगवान को ढूंढते हैं।

यह समस्या भारत ही नहीं, बल्कि पाश्चात्य देशों में भी भयंकर रूप ले चुकी है। और यही युवा यदि देश के कर्णधार बनेंगे तो मानवीय और सामाजिक मूल्यों का क्या होगा, इसका अन्दाजा हम लोग स्वयं ही लगा सकते हैं।

धर्म का उचित रूप से अनुसरण करने से व्यक्ति इन कलुषित संस्कारों से मुक्त हो सकता है। अतः धर्म को एक बाधक के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वच्छ माध्यम के रूप में हम सब को अपनाना होगा। आध्यात्मवाद धर्म के उचित पालन करने से ही विस्तृत होगा, इसके दुरुपयोग से नहीं।

मेरी बिटिया

मेरी बिटिया प्यारी प्यारी
सोई, सपनों में थी खोई
अम्मा बाबा वारी वारी
आए जगाने, जग री प्यारी

दादी के अखबार में झाँके,
दादा की घंटी संग झूमे,
मम्मी के खाने में डूबे,
पापा के संग मस्ती सूझे,

अलसाई सी आँखे खोले
मुरझाई सी निंदिया तोड़े
छम-छम, छम-छम घर में दौड़े,
खेले कूदे कभी न हारे।

प्यारी-प्यारी चोटी बाँधे
कंधे पर बस्ता लटकाए,
तुतले-तुतले बोलों में वो
स्कूल की सारी सीख बताए
मेरी बिटिया प्यारी-प्यारी।



अनुपमा ढौडियाल
पत्नी श्री एम0 एन0 ढौडियाल

महिलाओं के सामाजिक उत्थान में महिला आरक्षण विधेयक की आवश्यकता



आई० एस० पुण्डीर
मानचित्रकार श्रेणी-1

भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिये जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गति-शील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक-सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं।

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों से बराबरी का दर्जा हासिल था। पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी, महिलाओं का विवाह एक परिपक्व उम्र में होता था और सम्भवतः उन्हें अपना जीवनसाथी चुनने की भी आजादी थी। समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में मध्ययुगीन काल के दौरान गिरावट आनी शुरू हुई। जब भारत के कुछ समुदायों में सती-प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गई थी, इसके पश्चात् भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की बेहतर स्थिति को वापस हासिल करने की कोशिश की और प्रभुत्व के स्वरूपों पर सवाल उठाया। भक्ति आंदोलन में कवियित्री मीराबाई सबसे महत्वपूर्ण चेहरों में एक थी। भक्ति आंदोलन के पश्चात् सिक्खों के पहले गुरु, गुरुनानक ने भी पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता के संदेश को प्रसारित किया। यूरोपीय विद्वानों ने 19 वीं सदी में यह महसूस किया था कि हिंदू महिलाएं "स्वाभाविक रूप से मासूम" और अन्य महिलाओं से "अधिक सच्चरित्र" होती हैं। अंग्रेजी शासन के दौरान राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, आदि जैसे कई सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान के लिए लड़ाईयाँ लड़ी इनके साथ-साथ मिशनरियों की पत्नियाँ जैसे कि मार्था मौल्ट नी मीड और उनकी बेटी एलिजा काल्डवेल नी मौल्ट को दक्षिण भारत में लड़कियों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए आज भी याद किया जाता है। भारत के आजादी के संघर्ष में महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी भिकाजी कामा, डा० एनी० बेसेंट, प्रतिलता वाडेकर, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, अरुना आसिफ अली, और कस्तूरबा गाँधी कुछ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल हैं। एक कवियित्री और स्वतंत्रता सेनानी सरोजनी नायडु भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला और भारत के किसी राज्य की पहली महिला राज्यपाल थी। स्वतंत्र भारत का संविधान सभी भारतीय महिलाओं को समान अधिकार (अनुच्छेद 14), राज्य द्वारा कोई भेद-भाव नहीं करने (अनुच्छेद 15(1)), अवसर की समानता (अनुच्छेद 16) समान कार्य समान वेतन (अनुच्छेद 39(घ)) की गारंटी देता है। भारत सरकार ने 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया था। महिलाओं के सशक्तिरण की राष्ट्रीय नीति 2001 में पारित की गई थी। उपरोक्त वर्णित समस्त नियमों एवं कानूनों के उपरान्त आज भी भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यंत दयनीय है।

महिला आरक्षण क्यों? भारत में महिलाओं के सम्मान और समानता की विचारधारा उतनी ही सशक्त रही है जितनी की इनके साथ असमानता की। समय बीतने के साथ पुरुष प्रधान समाज ने न मालूम कैसे रवैये में परिवर्तन कर लिया और नारी भी इसकी आदि हो गई। सती सावित्री, अहिल्या देवी, रानी लक्ष्मीबाई, अदिति पंत, बच्छेंद्री पाल, किरण बेदी, कल्पना चावला जैसी तमाम भारतीय महिलाओं के रोल माडल हैं। वह कौन सा कार्य है जो प्रस्तावित 33 फीसदी वर्ग ने नहीं कर दिखाया है। परन्तु फिर भी स्त्रियों की दशा आज भी दयनीय है। भारत में कानून तो बहुत है परन्तु उनका उपयोग न के बराबर होता है। महिला आरक्षण विधेयक बन जाने के उपरान्त उम्मीद है कि महिलाएँ अब आत्मविश्वास के साथ अपने हक की मांग करें। अपने अधिकारों को कानूनी रूप से प्राप्त करने के लिए वे स्वयं आगे आए। अगर व्यवहारिक रूप से अपने समाज के अंदर ही देखें तो हम पाते हैं कि महिलाओं को उनके कानूनी हक देना हम गवारा नहीं करते हैं। देते भी हैं तो एक कृपा के तौर पर। बेटी अगर पिता की संपत्ति पर हिस्सा मांगती है तो कहा जाता है कि कितनी लालची बेटी है। जबकि यह उसका कानूनी अधिकार है। पर अमूमन ऐसा नहीं होता है। दरअसल महिलाओं को अधिकार तो चाहिए परन्तु कृपा के अन्तर्गत

नही बल्कि उन्हे न्याय के अन्तर्गत चाहिए। जब महिलाओं के आधा जगत कहा जाता है तो हम उन्हे आधा हिस्सा क्यों नहीं दे सकते हैं। राजनीति में भी जब भी स्त्री को कोई भी बड़ा पद मिलता है तो उसे या तो पति दिवंगत होने पर या पिता के दिवंगत होने पर मिलता है। बड़ी से बड़ी सत्तासीन महिलाओं को उनका पद भावनात्मक कारणों से अधिक मिलता है। यह स्त्रियों के स्वाभिमान पर चोट है और उनके लिए अपमानजनक समाज का मौजूदा नजरिया तो स्त्रियों को बर्दाश्त न करने वाला है। कन्या भ्रूण हत्या के मामले आते रहते हैं यदि यही सोच पूरे समाज की हो गई तो उनके अस्तित्व का संकट भी हमारे सामने है। समाज की मानसिकता बदलने की जरूरत है। समाज को बदलने की पहल भी महिलाओं को करनी होगी। महिलाओं को शिक्षित होना होगा, शिक्षा से साहस आता है। जब हम वृहत्तर समाज के बारे में सोचते हैं तो उसकी प्रगति के लिए जरूरी है कि एक भागीदारी सुनिश्चित हो। इसके लिए महिला आरक्षण अति आवश्यक है और इस आरक्षण की स्वीकृति के बाद भी यह प्रभावपूर्ण तरीके से लागू हो। कोई भी कानून तभी प्रभावी होता है जब वह सदिच्छा से लागू किया जाता है।

कोरोना से जंग

आज कोरोना की दहशत में,
पूरा जग घबराया है,
शान्त फिजा थी आनन्दित जन,
क्या चीन ने विष फैलाया है,

प्रेम और भाईचारा था,

लग-लग गले सब मिलते थे
अनिल प्रीति की बहती थी,
अमन शान्ति भी रहती थी,
ऐसी आनन्दित बेला में,
रोग कहाँ से आया है,.....आज।



ममता तोमर
वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन

मूक दर्शक बेबस प्राणी,
राह कोई ना सूझ रही,
एक आसरा लीलाधर का,
यद्यपि जीवन नैया डूब रही,
क्षीण हुआ है तेज पुँज अब,
"सूरज" भी कुम्हलाया है,.....आज कोरोना

जीवन चक्षु खोल कर प्राणी ,
आत्म बोध अब करना है,
पाप किया या पुण्य कमाया,
हर कर्मों की गणना है,
बने नास्तिक फिरते थे जो,
हर जुबां पर नाम प्रभु का आया है,

अवसादी मन विचलित ना हो,
नया सवेरा आयेगा,
खिल जायेगी हर बाग में कलियां,
महकेंगे वन उपवन सारे,
आनन्दित हो फिर प्राणी, तू जग को हर्षायेगा,
बार-बार हर कटिबन्धों को,
तू तोड उबर कर आया है।।

सर्दी

सर्दी आई, सर्दी आई,
खुशियों की बौछारें लाई।
सभी को इसने नानी याद दिलाई।
नाक सभी की लाल हो गई,
सिकुड़ी सबकी चाल हो गई।
सर्दी आई, सर्दी आई,
सबको इसने नानी याद दिलाई।

सबने लादे ढेर से कपड़े,
पतले मोटे, नीले पीले।
सर्दी का यह मौसम आया,
बर्फ की वो बौछारें लाया,
सर्दी आई, सर्दी आई,
खुशियों की बौछारें लाई।



हर्षित लटोतरा
पुत्र ओम प्रकाश सर्वेक्षक

वक्त

वक्त जिन्दगी में बहुत कुछ दिखाता है,
कभी खुशी तो कभी गम लेकर आता है।
वक्त में गुजरा हुआ पल कैद हो जाता है,
कुछ पल हंसाकर तो कुछ रुलाकर जाता है।

वक्त के आगे किसी की नहीं चलती है,
जो समझे इसको उसी की ही चलती है।
वक्त बादशाह है जो रंक को राजा,
और राजा को रंक बना जाता है।
अतः वक्त की जो कद्र करता है,
वो ही जीवन में आगे बढ़ता है।



ओम प्रकाश
वरिष्ठ सर्वेक्षक

गुरुनानक देव जी के दस उपदेश अपनाए और अपने जीवन को सफल बनाए

1. गुरु नानक देव जी ने एक ओंकार का नारा दिया यानी परमात्मा एक है। वह सभी जगह मौजूद है। हम सबका पिता वही है इसलिए सबके साथ प्रेमपूर्वक रहना चाहिए।
2. किसी भी तरह के लोभ को त्याग कर इंसान को अपने हाथों से मेहनत कर और न्यायोचित तरीको से धन का अर्जन करना चाहिए।
3. कभी भी किसी का हक नहीं छीनना चाहिए बल्कि मेहनत और ईमानदारी की कमाई से जरूरतमंदों की भी मदद करनी चाहिए।
4. धन को जेब तक ही सीमित रखना चाहिए उसे अपने हृदय में स्थान नहीं बनाने देना चाहिए अन्यथा नुकसान हमारा ही होगा।
5. स्त्री जाति का आदर करना चाहिए, गुरुनानक देव जी, स्त्री और पुरुष सभी को बराबर मानते थे।
6. संसार को जीतने से पहले स्वयं अपने विकारों और बुराइयों पर विजय पाना अति आवश्यक है।
7. अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। इसलिए अहंकार कभी भी नहीं करना चाहिए।
8. गुरु नानक देव पूरे संसार को एक घर मानते थे जबकि संसार में रहने वाले लोगों को एक ही परिवार का हिस्सा।
9. गुरु नानक देव जी ने हमेशा ही प्रेम, एकता, समानता, भाईचारा और प्रभु भजन का संदेश दिया।
10. तनाव मुक्त रहकर अपने कार्य को निरन्तर करते रहने चाहिए और हमेशा खुश रहना चाहिए।



हर्षित लटोतरा
पुत्र ओम प्रकाश सर्वेक्षक



अव्वल अल्लाह नूर उपाया
कुदरत दे सब बन्दे
एक नूर ते सब जग उपजाया
कौन भले को मन्दे।

भोजन के प्रकार

भीष्म पितामाह ने अर्जुन को 4 प्रकार से भोजन न करने को बताया था

1- पहला भोजन:-

जिस भोजन की थाली को कोई लांघ कर गया हो वह भोजन की थाली नाले में पड़े

कीचड़ के समान होती है।

2.-दूसरा प्रकार:-

जिस भोजन की थाली में ठोकर लग गई, पाव लग गया वह भोजन की थाली भिष्टा से समान होती है।

3.-तीसरे प्रकार का भोजन:-

जिस भोजन की थाली में बाल पड़ा हो, केश पड़ा हो वह दरिद्रता के समान होता है।

4.- चौथे नम्बर का भोजन:-

अगर पति और पत्नि एक ही थाली में भोजन कर रहे हो तो वह गरिदा के तुल्य होता है, और सुनो अर्जुन अगर पत्नी पति के भोजन करने के बाद थाली में भोजन करती है, उसी थाली में भोजन करती है, या पति का बचा हुआ खाती है तो उसे चारों धाम के पुण्य का फल प्राप्त होता है।

“चारोधाम के प्रसाद के तुल्य वह भोजन हो जाता है”

और सुनो अर्जुन:-

बेटी अगर कुमारी हो और अपने पिता के साथ बैठकर भोजन करती है एक ही थाली में तो उस पिता की कभी अकाल मृत्यु नहीं होती, क्योंकि बेटी पिता की अकाल मृत्यु को हर लेती है। इसलिए बेटी जब तक कुमारी रहे तो अपने पिता के साथ बैठकर भोजन करें।
क्योंकि वह अपने पिता की अकाल मृत्यु को हर लेती है।

“स्मरण रखियेगा”

“संस्कार दिये बिना सुविधायें देना, पतन का कारण है.....”

सुविधाएं अगर आप ने बच्चों को नहीं दिये तो हो सकता है वह थोड़ी देर के लिए रोए.....
पर संस्कार नहीं दिये तो वे जीवन भर रोएंगे।



शुभम खण्डूडी
पुत्र श्री सुभाष खण्डूडी

कोरोना वायरस पर हिन्दी में निबंध



(अरुण सैनी)
तकनीकी अधिकारी

प्रस्तावना :- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना में 900 गुना छोटा है, लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है।

कोरोना वायरस क्या है?

कोरोना वायरस सीओवी का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसंबर में सबसे पहले चीन में पकड़ में आया था।

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के ज़रिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी की जरूरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

क्या हैं इस बीमारी के लक्षण?

कोविड 19/कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब?

इस वायरस को कोरोना वायरस को कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाइयां दी जा सकती हैं।

जब तक आप ठीक न हो जाएं, तब तक आप दूसरों से अलग रहें। कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैक्सिन विकसित करने पर काम चल रहा है। इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका पूर्ण परीक्षण कर लिया जाएगा। कुछ अस्पताल एंटीवायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे हैं।

क्या हैं इससे बचाव के उपाय?

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए।

अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। खांसते और छींकते समय नाक और मुंह रुमाल या टिश्यू पेपर से ढककर रखें।

जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें।
अंडे और मांस के सेवन से बचें।
जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

मास्क कौन सा और कैसे पहनें?

अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरूरत नहीं है।
अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, तो आपको मास्क पहनना होगा।

जिन लोगों को बुखार, कफ या सांस में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

मास्क पहनने का तरीका :

मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए।
अगर हाथ लग जाए तो तुरत हाथ धोना चाहिए।
मास्क को ऐसे पहनना चाहिए कि आपकी नाक, मुंह और दाढ़ी का हिस्सा उससे ढका रहे।
मास्क उतारते वक्त भी मास्क की लास्टिक या फीता पकड़कर निकालना चाहिए, मास्क नहीं छूना चाहिए।
हर रोज मास्क बदल दिया जाना चाहिए।

कोरोना का खतरा कैसे करें कम:-

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं।
अपने हाथ अच्छी तरह धोएं।
खांसते या छींकते वक्त अपना मुंह ढक लें।
हाथ साफ नहीं हो तो आंख, नाक और मुंह को छूने से बचें।

कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोकें?

सार्वजनिक वाहन जैसे बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें।
घर में मेहमान न बुलाएं।
घर का सामान किसी और से मंगाएं।
ऑफिस, स्कूल या सार्वजनिक जगहों पर न जाएं।
अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं, तो ज्यादा सतर्कता बरतें।
अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ करें।
14 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके।
अगर आप संक्रमित इलाके से आए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहे हैं तो आपको अकेले रहने की सलाह दी जा सकती है। अतः घर पर रहें।

मेरा विश्वास मेरे माता-पिता

जिंदगी में हम जितने भी आगे पहुँचेंगे सबसे ज्यादा योगदान हमारे माता-पिता का होता है क्योंकि माता-पिता हमारे गुरु होते हैं। माता-पिता अच्छे दोस्त होते हैं और माता-पिता ही हमारे अच्छे सलाहकार होते हैं।

जैसे कि एक बच्चा जन्म लेता है, तो उसको माता-पिता पालते हैं और उसको काबिल एवं अच्छा बनाने में अपना पूरा जीवन लगा देते हैं।

बहुत से लोग अपने माता-पिता को इज्जत नहीं देते हैं। मुझे बहुत बुरा लगता है, जब कोई अपने माता-पिता को उनकी बुढ़ापे की आयु हो जाने पर बोझ समझने लगते हैं और उनसे छुटकारा पाने के उपाय सोचने लगते हैं। और उन्हें या तो वृद्धाश्रम या कहीं छोड़ आते हैं। मेरी सोच से ऐसे लोग इस संसार के सबसे बड़े पापी होते हैं।

मेरे लिए मेरे माता-पिता ईश्वर तुल्य हैं।

हर व्यक्ति को अपने बूढ़े माता-पिता की बहुत प्यार से सेवा करनी चाहिए क्योंकि माता-पिता को अपने बच्चों से प्यार के अलावा कुछ नहीं चाहिए होता है।

इंसान हर कर्ज चुका सकता है परन्तु अपने माता-पिता का कर्ज अपने जीवन में कभी नहीं चुका सकता इसलिए अपने माता पिता को सम्मान और प्यार देना चाहिए।।

दिल का दर्द

अपने दुख दर्द छिपाने का,
बस एक ही जरिया है,
जब पूछे कोई कैसे हो,
हम कह देते हैं सब बढ़िया है।

अश्रु किन्हे हम दिखलायें,
किससे मन की बात कहे।
बेहतर लगती है पीड़ा अपनी,
भीतर अपने चुपचाप सहें।

किस की जिह्वा हम पकड़ेंगे,
किस-किस के होठ सिलायेंगे।
ऐसा बोला तो क्यों बोला,
किस-किस से लड़ने जायेंगे।

चेहरे पर मुस्कान लिए,
वाणी में रहते रस घोले।
स्वप्न सरीखा यह जीवन,
जो सरक रहा है हौले-हौले।

कुछ पीड़ा सुनकर मुस्कुराएंगे,
कुछ नमक छिड़ककर जायेंगे।
कुछ पाप पुण्य का लगा गणित,
पापों का फल बतलाएंगे।



वैभवी चमोली
पुत्री श्री दुर्गा प्रसाद
अवर श्रेणी लिपिक



सुभाष
एम० टी० एस०

उत्तराखंड का दर्द:- पलायन

उत्तराखंड के पहाड़ों से पलायन आज एक बड़ा और विकराल समस्या का रूप धारण कर चुका है। इस समस्या से निपटने के लिए यदि तुरंत कोई उपाय नहीं किए गए तो हिमालयीय लोक संस्कृति पर भी बहुत बड़ा खतरा मंडरा सकता है। उत्तराखंड में कोई भी सरकार और राजनैतिक दल इससे निपटने के लिए ठोस उपाय नहीं कर पायी है। अब यह पलायन का मुद्दा महज एक राजनैतिक मुद्दा नहीं रह

गया है बल्कि सामाजिक जन जागरण, मानवाधिकार के मूल्यों की रक्षा और अपनी सांस्कृतिक पहचान खोने के संकट से जुड़ा राष्ट्रीय मुद्दा बनता जा रहा है। पिछले वर्षों से चाहे स्थानीय पहाड़वासी हों या दूरदराज इलाकों में रहने वाले प्रवासी जन पलायन के अभिशाप की पीड़ा झेलने के लिए विवश हैं। सरकार और उत्तराखंड की विपक्षी पार्टियां इस पलायन और विस्थापन पर मौन साधे हुए हैं किन्तु सोशल मीडिया के जागरूक नागरिकों और सामाजिक संस्थाओं की ओर से इस समस्या पर गहन चिंता प्रकट की जा रही है।

गौरतलब है कि नए राज्य की संकल्पना उत्तराखंड राज्य के चिर प्रतीक्षित लोक कल्याणकारी सपनों को पूरा करने और पलायन को रोकने के मकसद से हुई थी, न कि इसे और विकराल रूप देकर यहां से आम जनता को भगाने के लिए। आज हमारे राजनेताओं ने उत्तराखंड के राज्य प्रशासन को लूट खसोट मचाने वाले संगठित माफियाओं के हाथों लगभग गिरवी रख दिया है। यही कारण है कि अब यह पलायन का मुद्दा महज एक राजनैतिक मुद्दा नहीं रह गया है बल्कि जन जागरण, मानवाधिकार के मूल्यों की रक्षा और अपनी सांस्कृतिक पहचान खोने के संकट से जुड़ा राष्ट्रीय मुद्दा बनता जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों से चाहे स्थानीय पहाड़वासी हों या दूरदराज इलाकों में रहने वाले प्रवासी जन पलायन के अभिशाप की पीड़ा झेलने के लिए विवश हैं।

उत्तराखंड में पलायन कैसे रूके? इसके कारणों, मूल्य समस्याओं और निदान-समाधान को लेकर आजकल सोशल मीडिया में एक जोरदार बहस छिड़ी हुई है। सवाल यह भी उठाए जा रहे हैं कि इस भारी संख्या में हो रहे पलायन के लिए कौन जिम्मेदार है? उत्तराखंड सरकार के अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा हाल ही में जारी आंकड़े बताते हैं कि जब से नए राज्य का गठन हुआ है तब से लेकर उत्तराखंड के 2 लाख 80 हजार 615 मकानों पर ताले लग चुके हैं।

पहाड़ी जीवन को गति देने के लिए, उसमें नई ऊर्जा भरने के लिए और गांवों को फिर से आबाद करने के लिए होना तो ये चाहिए था कि सरकारें बहुत आपात स्तर पर इस पलायन को रोकती। दुर्गम इलाकों को तमाम बुनियादी सुविधाओं से लैस कर कुछ तो सुगम बनाती। खेत हैं लेकिन बीज नहीं, हल, बैल, पशुधन सब गायब, स्कूल हैं तो टीचर कम, पाइपलाइनें हैं तो पानी कम, बिजली के खंभे हैं तो बिजली नहीं, अस्पताल हैं तो दवाईयां उपकरण और डॉक्टरों की कमी, ये किल्लत भी जैसे पहाड़ की नियति बन गई है। ऐसा नहीं है कि उत्तराखंड पलायन इन 16 वर्षों की ही समस्या है। काफी पहले से लोग रोजी-रोटी के लिए मैदानों का रूख करते रहे हैं। एक लाख सर्विस मतदाता इस राज्य में है। यानी जो सेना, अर्धसैनिक बल आदि में कार्यरत है। ये परंपरा बहुत पहले से रही है, लेकिन अगर वे इतने बड़े पैमाने पर गांवों के परिदृश्य से गायब हुए हैं, तो ये सोचने वाली बात है कि क्या वे सभी उस सुंदर बेहतर जीवन को हासिल कर पाएं होंगे जिसकी कामना में वे आपने घरों से मैदानों की ओर निकले होंगे। इस मूवमेंट का, उसके नतीजे का अध्ययन किया जाना जरूरी है।

उत्तराखंड के पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश का उदाहरण हमारे सामने है। उसने उन्हीं चीजों में अपनी पहचान और समृद्धि का निर्माण किया है जिनका संबंध विशुद्ध पर्वतीयता से है। जैसे कृषि, बागवानी, पनबिजली, पर्यटन, कला आदि। उत्तराखंड में क्या ये संभव नहीं हो सकता था? आज अगर बूढ़े अकेले छूट गए हैं या गांव भुतहा हो चले हैं तो इसकी जिम्मेदारी किस पर आती है, क्या उन जगहों पर छोड़ कर जाने वालों पर या उन लोगों पर जो इस भूगोल के शासकीय नियंत्रण और नीति निर्धारक चुने गए हैं। महात्मा गांधी ने कहा था, भारत की आत्मा गांवों में बसती है। लेकिन जब गांव ही नहीं रहेंगे तो ये आत्मा बियाबान में ही भटकेगी।

उत्तराखंड में पलायन का बड़ा कारण सुदूर क्षेत्रों में समर्थ-संवेदनशील शिक्षा, चिकित्सा, और रोजगार का न होना है। स्कूल व प्राथमिकता चिकित्सा केन्द्र तो हैं, लेकिन उनसे डॉक्टर व मास्टर नहीं हैं। रोजगार की योजनाएं हैं,



विजय सिंह भण्डारी
कम्प्यूटर टाईपिस्ट

लेकिन क्रियान्वयन नहीं है। इन समस्याओं का समाधान पलायन नहीं, सुदूर क्षेत्रों में सस्ती शिक्षा, सस्ती चिकित्सा और रोजगार के सक्षम व जवाबदेह तंत्र का विकास है। शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार जीवन की बुनियादी जरूरतों में से एक है। इनकी पूर्ति होनी ही चाहिए। समस्या के मूल में समाधान स्वतः निहित होता है। पलायन कि समस्या के समाधान के लिए आवश्यक है कि रोजगार का विकास स्थानीय स्तर पर हो।

उत्तराखंड में प्राथमिकता के तौर पर फल, फूल, औषधि व जैविक खेती-बागवानी पट्टियों के विकास की योजनाओं को लागू किया जाए। विकेंद्रित स्तर पर खेती, बागवानी, वनोपज, जैव तकनीकी, खाद्य प्रसंस्करण संबंधी उच्च शिक्षा, शोध, कौशल उन्नयन तथा उत्पादन इकाइयों की स्थापना की जाए। सभी चिन्हित जैव संपदा उत्पादों के स्थानीय ग्रामसभा द्वारा पेटेंट करावने व अधिकतम मूल्य में बिक्री करने के लिए स्थानीय समुदाय को प्रशिक्षित व सक्षम बनाने की जिम्मेदारी सरकार खुद ले। जैवसंपदा उत्पादों के न्यूनतम बिक्री करने के लिए स्थानीय समुदाय को प्रशिक्षित व सक्षम बनाने की जिम्मेदारी सरकार खुद ले। जैवसंपदा उत्पादों के न्यूनतम बिक्री मूल्य का निर्धारण सरकार द्वारा हो।

उचित पैकेजिंग, संरक्षण तथा विपणन व्यवस्था के अभाव में उत्पादनोपरांत 40 प्रतिशत फलोपज तथा 80 प्रतिशत वनोपज बेकार चले जाते हैं। इनके संरक्षण की ढांचागत व्यवस्था हो। स्वयं सहायता समूहों को विशेष सहायता प्रदान कर सक्रिय किया जाए। उनके उत्पादों की गुणवत्ता व विपणन की जिम्मेदारी प्रशासन ले। आवश्यक है कि स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों के संवर्धन संरक्षण और विकास कार्य का प्रबंधन स्थानीय ग्रामसभा द्वारा हो। जरूरी है समाज जिम्मेदार बने।

निष्कर्ष

आजादी के बाद पंचायती राज व्यवस्था में सामुदायिक विकास तथा योजनाबद्ध विकास की अन्य अनेक योजनाओं के माध्यम से गांवों की हालत बेहतर बनाने और गांव वालों के लिए रोजगार के अवसर जुटाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता रहा है। 73 वें संविधान संशोधन के जरिए पंचायती राज संस्थाओं को अधिक मजबूत तथा अधिकार-सम्पन्न बनाया गया और ग्रामीण विकास में पंचायतों की भूमिका काफी बढ़ गई है। पंचायतों में महिलाओं व उपेक्षित वर्गों के लिए आरक्षण से गांवों के विकास की प्रक्रिया में सभी वर्गों की हिस्सेदारी होने लगी है। इस प्रकार से गांवों में शहरों जैसी बुनियादी जरूरतें उपलब्ध करवाकर पलायन की प्रवृत्ति को सुलभ साधनों से रोका जा सकता है।

आओ फिर से दिया जलाएं

आओ फिर से दिया जलाएं
भरी दुपहरी में अधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़े
बुझी हुई बाती सुलगाएं
आओ फिर से दिया जलाएं
हम पडाव को समझे मंजिल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में
आने वाला कल न भुलाएं
आओ फिर से दिया जलाएं
आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने
नव दधीचि हड्डियों गलाएं
आओ फिर से दिया जलाएं

—अटल बिहारी बाजपेयी



—वेदांशी चमोली
पुत्री श्री दुर्गा प्रसाद
अवर श्रेणी लिपिक



सात्विक गुप्ता,
पुत्र श्री विवेक कुमार गुप्ता,
अधि. सर्वे.





दिव्यांश दौडियाल
पुत्र श्री
एम०एन० दौडियाल
अधीक्षक सर्वेक्षक



निर्मल सैनी,
पुत्र श्री अरुण कुमार सैनी,
अधि० सर्वे०



साम्राज्यवाद का नाश हो

कभी न हो मन में भय कोई, उन्नति का सदा प्रयास हो ।
दानवता का अन्त और मानवता का उद्विकास हो ।
राष्ट्र राष्ट्र को खा जाने के कुत्सित विचार का ह्यास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास साम्राज्यवाद का नाश हो ।

देख दृश्य नर संघारों के ये वसुधा अब न उदास हो ।
बहुत हुए संग्राम विश्व में अब न रक्त की प्यास हो ।
नफरत, घृणा और वैमनश्यता का अब न क्रूर इतिहास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास साम्राज्यवाद का नाश हो ।

जैविक व रासायनिक हथियारों से न सृष्टि का सर्वनाश हो ।
गोला, तोप और एटम बम का बस संग्रहालयों में निवास हो ।
नैसर्गिक वरण का नियम तोड़ अब न प्रकृति विनाश हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास साम्राज्यवाद का नाश हो ।

संकीर्ण विचार छोड़ दुनिया में, नये सृजन की आस हो ।
दुर्बल और प्रबल का भेद मिटा कर, समानता का वास हो ।
सत्य, तर्क और विवेक से नव युग का शिलान्यास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास साम्राज्यवाद का नाश हो ।

विश्व बन्धुता की प्रबल भावना का प्रचलन और विकास हो ।
धरती के सारे जीवों का हित और अन्योन्य अकूत विश्वास हो ।
राम राज्य के शुभ सपने का सम्पूर्ण धरा पर विन्यास हो ।
आओ मिल कर करें प्रयास साम्राज्यवाद का नाश हो ।



बृजेन्द्र सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

तप्त हृदय को, सरस स्नेह से,
जो सहला दे, मित्र वही है ।
रुखे मन को, सराबोर कर,
जो नहला दे, मित्र वही है
प्रिय वियोग, संतप्त चित्त को,
जो बहला दे, मित्र वही है ।
अश्रु बूंद की, एक झलक से
जो दहला दे, मित्र वही है

—मैथिली शरण गुप्त

गीतोपदेश

1. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्व कर्मणि ॥

अर्थ— तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उनके फलों में नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल के हेतु मत हो और कर्म न करने के विषय में तू आग्रह न कर।



सार्थक गुप्ता,
पुत्र श्री विवेक कुमार गुप्ता,
अधि• सर्वे•

2. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

अर्थ— श्री कृष्ण कहते हैं, "जब-जब इस पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है और अधर्म आगे बढ़ता है, तब-तब मैं इस पृथ्वी पर जन्म लेता हूँ सज्जनों और साधुओं की रक्षा के लिए दुर्जनो और पापियों के विनाश के लिए और धर्म की संस्थापना के लिए मैं हर युग में जन्म लेता हूँ।"

3. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गुहणाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

अर्थ— जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नए वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है।



4. नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति
पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति
मारुतः ॥

अर्थ— इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकता, इसको आग जला नहीं सकती, इसको जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती।

5. अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मुतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥

अर्थ— किन्तु यदि तू इस आत्मा को सदा जन्मनेवाला तथा सदा मरनेवाला मानता है, तो भी हे महाबाहू ! तू इस प्रकार शोक करने योग्य नहीं है।

उत्तराखण्ड का पाँचवा धाम "सेम मुखेम नागराजा"

प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिक व पौराणिक धार्मिक स्थलों के लिए उत्तराखण्ड पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यह भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियों एवं तपस्वियों की तपस्थली रही है। यहां पर अनेक हिन्दू देवी देवताओं के सिद्धपीठ एवं पवित्र धाम है। श्री बद्रीनाथ, श्री केदारनाथ, माँ गंगोत्री एवं माँ यमनोत्री धाम के साथ ही सेम मुखेम नागराजा मंदिर भी असंख्य श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। भगवान श्री कृष्ण को समर्पित सेम मुखेम नागराजा धाम को उत्तराखण्ड का पाँचवा धाम माना जाता है। भगवान श्री कृष्ण को अनेक नामों से जाना



(हरीसिंह)

मानचित्रकार श्रेणी-1

जाता है। जैसे नन्द के लाल, देवकीनन्दन, गिरधारी कन्हैया, मुरली मनोहर आदि-आदि। मथुरा और द्वारिका में तो श्री कृष्ण जन-जन के प्रमुख देवता है, भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में श्री कृष्ण की अलग-अलग नामों से पूजा अर्चना की जाती है। उदाहरण के लिए गुजरात में रणछोड़ जी, महाराष्ट्र में विठ्ठल जी महाराज, बंगाल में महाप्रभु व ठाकुर जी एवं उत्तराखण्ड में भगवान नागराजा।



भगवान श्री कृष्ण के केदारखण्ड प्रवास की स्मृतियां संजोता सेम मुखेम नागराजा मन्दिर उत्तराखण्ड के टिहरी जिले की प्रतापनगर तहसील में समुद्र तल से लगभग 7000 फीट की ऊंचाई पर स्थित प्रसिद्ध नागतीर्थ है। सेम डांडा की सबसे ऊंचाई पर घने जंगल, हरियाली एवं शान्त वातावरण में स्थित यह दिव्य मन्दिर मन मोह लेता है। मंदिर का सुन्दर एवं भव्य मुख्य द्वार 14 फीट चौड़ा एवं 27 फीट ऊँचा है। इसमें नागराज फन फैलाये हैं और भगवान श्री कृष्ण नागराज के फन के ऊपर वंशी में लीन दिखाये गये हैं। मंदिर के गर्भगृह में नागराज भगवान की स्वयं भू शिला है। इस शिला को द्वापर युग का बताया जाता है। इसी शिला की यहां पर मुख्य पूजा की जाती है। मंदिर के दाईं तरफ, श्री कृष्ण के इस क्षेत्र में आने के समय यहाँ के तत्कालीन राजा

गंगू रमोला की परिवार सहित मूर्तियां स्थापित हैं। नागराजा भगवान की पूजा अर्चना से पहले यहां पर गंगू रमोला परिवार की पूजा का विधान है। इस मंदिर का लगभग 2 कि०मी० पैदल रास्ता हरियाली एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। इस रास्ते में बांझ, बुरांस, खर्सू, केदारपत्ती आदि अनेक वृक्षों की खुशबु से वातावरण अत्यन्त मनमोहक रहता है।

वैसे तो सेम नागराजा से कई कहानियां एवं पौराणिक कथायें जुड़ी हैं। हरिवंशपुराण, महाभारत और अनेक विद्वानों द्वारा रचित पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर भगवान श्री कृष्ण के उत्तराखण्ड में नागराजा नाम से जन जन के इष्टदेव के रूप में पूजे जाने के पीछे सशक्त एवं रोचक कथायें वर्णित हैं। महाभारत युद्ध के घटनाक्रम से श्री कृष्ण अत्यन्त व्यथित एवं अशान्त हो गये थे। शांति की तलाश में वे ब्राह्मण वेश धारण कर केदारखण्ड की भूमि में आये और यहां की पवित्रता एवं सौन्दर्य से मोहित होकर यहीं रहने का फैसला किया, अतः उन्होंने केदारखण्ड की इस भूमि रमोलगढ़ी के राजा गंगू रमोला से उनके लिए एक कुटिया बनवाने का आग्रह किया। राजा रमोला अत्यंत नास्तिक स्वभाव का लालची, वृद्ध एवं संतानहीन था। राजा रमोला ने अपने राज्य में ब्राह्मण वेशधारी श्री कृष्ण को स्थान देने से इन्कार कर दिया। इसके पश्चात् श्री कृष्ण ने राजा से आने वाली पूर्णिमा तक कुटिया निर्माण का पुनः आग्रह किया और यमुना नदी के निकट एक गांव में एक वृद्ध आस्तिक महिला का आतिथ्य स्वीकार कर लिया। श्री कृष्ण के रमोलगढ़ी से जाने के पश्चात् वहां पर अनेक प्रकार के संकट उत्पन्न होने लगे, गाय भैंसों ने दूध देना बन्द कर दिया, सूखा पड़ने लगा, अनाज का संकट प्रजा में होने लगा, राजा का स्वास्थ्य भी दिन प्रतिदिन गिरने लगा। रानी



मैणावती आस्तिक एवं ब्राह्मण सेवा भाव वाली एवं निःसन्तान होने के कारण अत्यंत दुखी थी। अब राज्य के हालत से चिन्तित होकर रानी ने राजा को समझाया कि यह सब ब्राह्मण देवता के रूष्ट होने के कारण संकट पैदा हो रहे हैं। अतः महाराज को ब्राह्मण देवता के लिए सेम पर्वत पर उनकी इच्छानुसार मंदिर निर्माण करना चाहिए। राजा रमोला ने पत्नी व प्रजा के दबाव में मंदिर निर्माण करवाने का निर्णय किया, परन्तु छः बार अलग-अलग स्थानों पर मंदिर निर्माण होते ही ध्वंस होने से गंगू रमोला अत्यंत व्यथित एवं अशांत था। राजा को अपनी प्रतिष्ठा की अधिक चिन्ता थी। अहंकारवश वह नहीं समझ पा रहा था कि मंदिर स्वतः ही कैसे ध्वस्त हो रहे हैं। रानी मैणावती ने गंगू रमोला को समझाया कि बार-बार मंदिर निर्माण होते ही ध्वंस होना कोई दैवीय प्रकोप है, अतः महाराज को अपना अहंकार अभिमान सब त्यागकर ब्राह्मण देवता को आदर सहित वापस बुलाकर पुनः मंदिर का निर्माण उसी स्थान पर करवाना चाहिए जहां पर वह शिला है जिस पर पहली बार ब्राह्मण देवता बैठे थे। अब गंगू रमोला ने ब्राह्मण देवता की तलाश में अपने सैनिक भेजकर उस शिला को केन्द्र में रखकर श्रद्धापूर्वक देवता को स्मरण करते हुए मंदिर निर्माण शुरू करवाया। इसी बीच गंगू रमोला के स्वप्न में ब्राह्मण देवता ने श्री कृष्ण के रूप में दर्शन दिए और इस मंदिर के पूर्ण होने पर उनके राज्य में आने का आश्वासन दिया तथा इस मंदिर को प्रगटा सेम के नाम से और पूर्व में ध्वंस हुए छः मंदिरों को बरगडा सेम, तकबला सेम, गुप्त सेम, वारुनी सेम, बारुनी सेम और सतरंजू सेम के नाम से पूजे जाने का विधान बताया। अब गंगू रमोला का मन परिवर्तित हो चुका था। फिर एक दिन प्रभु श्री कृष्ण नागवंशी राजा कालिया नाग के स्वप्न में भी गये और उन्हें केदारखण्ड में अपने होने के बारे में बताया, नागवंशी राजा ने अपनी सेना के साथ प्रभु के दर्शन करने चाहे, परन्तु राजा रमोला ने उन्हें अपनी भूमि पर आने से मना कर दिया। जिससे नागवंशी क्रोधित हो गये और उन्होंने राजा रमोला पर आक्रमण करना चाहा, आक्रमण होने से पहले



ही नागवंशी राजा ने प्रभु के बारे में राजा रमोला को बताया जो अब कृष्ण भक्त बन चुके थे राजा रमोला ने प्रभु के मंदिर के पूर्ण होने के अवसर पर नागवंशी राजा को निमंत्रण दिया। मंदिर पूर्ण होने पर भी श्री कृष्ण ने इस स्थान पर नागराजा के रूप में पूजे जाने की नागवंशी राजा व गंगू रमोला का आग्रह स्वीकार किया और फिर नित्यप्रति प्रभु की यहां पर नागराजा के रूप में पूजा होने लगी। कुछ समय पश्चात् प्रभु ने इस मंदिर में सदैव के लिए एक शिला के रूप में विराजमान होना स्वीकार किया और परम धाम को चले गये। उसी शिला की तब से नागराजा देवता के रूप में पूजा अर्चना की जाती है। लोगों का विश्वास और आस्था है कि प्रभु श्री कृष्ण नागराजा के रूप में उस शिला में स्थापित है। असंख्य भक्तों की मनोकामना पूर्ण होना इस विश्वास को सिद्ध भी करता है, वृद्ध राजा गंगू व रानी मैणावती को प्रभु के वरदान से चिरयौवन प्राप्त हुआ एवं उन्हें दो दिव्य पुत्र सिद्धवा एवं विद्धवा प्राप्त हुए। मान्यता

है कि किसी व्यक्ति की कुण्डली में कालसर्प दोष हो तो सेम नागराजा मंदिर के दर्शन से इस दोष का निवारण हो जाता है एवं इस धाम में दिव्य जल में सच्ची श्रद्धा भक्ति आस्था के साथ स्नान करने से कुष्ठ रोगों का निवारण होता है। यहां पर प्रतीकात्मक रूप से नाग नागिन का जोड़ा प्रतिमाओं के रूप में चढ़ाने की परंपरा भी है जिसका बहुत महत्व यहां की स्थानीय मान्यताओं में है।

सेम नागराजा मंदिर देहरादून से लगभग 210 कि०मी० भी दूरी पर स्थित है यात्री नई टिहरी होते हुए या उत्तरकाशी होते हुए इस पावन धाम पर पहुँच सकते हैं। तलवला सेम तक यात्री वाहन द्वारा आ सकते हैं। उसके बाद लगभग 2 कि०मी० का पैदल सफर आपको मंदिर के प्रांगण तक पहुँचा देगा। सड़क मार्ग के आखिरी पड़ाव तलवला सेम में यात्रियों को ठहरने के लिए आश्रम, होटल आदि की व्यवस्था भी है। इस मंदिर में पूजा अर्चना नित्यप्रति होती है एवं श्रद्धालुओं के दर्शन हेतु मंदिर सदैव खुला रहता है। हर तीन साल में सेम मुखेम में एक भव्य मेले का आयोजन होता है जो कि मार्गशीर्ष माह की 11 गते (नवम्बर 26/27) को होता है इस मेले का धार्मिक महत्व है इसलिए हजारों श्रद्धालु मेले में आकर भगवान नागराजा के दर्शन का पुण्य प्राप्त करते हैं।

आशा करते हैं कि आपको इस स्थान के बारे में काफी कुछ परिचित करवाने में सफल हुआ हूँ।

डिप्रेशन— चलो बात करें

“मानसिक पीड़ा, शारीरिक दर्द की तुलना में कम नाटकीय लेकिन यह अधिक आम और असहनीय है।”

जब हम एक स्वस्थ शरीर की बात करते हैं तो हम आम रूप से एक रोग मुक्त शरीर की बात कर रहे होते हैं। जबकि एक स्वस्थ व्यक्ति तन, मन दोनों से ही स्वस्थ होना चाहिए। परन्तु 21 वीं सदी में भी मानसिक रोगों की कोई बात ही नहीं करता। मानसिक रोगों पर चर्चा शर्म का विषय है क्योंकि आज के इस मॉडर्न युग में भी मानसिक रोगी का मतलब-पागल। लोग सीधा ही सर्टिफिकेट पकड़ा देते हैं आपको। कुछ को लगता है कि ये आज के जमाने की बीमारी है। पहले तो नहीं होता था। समाज के इसी दबाव के चलते वो जो वास्तव में पीड़ित है इन मानसिक दुखों को दबा लेते हैं। वे बाहर से सामान्य रहते हैं किन्तु अन्दर-ही-अन्दर घुट रहे होते हैं। अवसाद भी इसी प्रकार का एक मानसिक रोग है। यह किसी X-ray या C.T.Scan में तो नहीं आता तो लगता ही नहीं कि ये भी कोई बीमारी हो सकती है।



(उपदेश कुमारी)
वरिष्ठ सर्वेक्षक

तो सवाल यह है कि अवसाद या डिप्रेशन आता कहाँ से है? ये हमेशा जरूरी नहीं कि यह बाहरी दुनिया से ही आये। बाहरी वातावरण और अंदरूनी हार्मोन्स मिश्रित रूप से अवसाद के कारण हैं। लोग अवसाद का सीधा मतलब तनाव से लगा लेते हैं पर सच तो यह है कि तनाव अवसाद से भिन्न है। यह हो सकता है कि आप बहुत तनाव में तो हो किन्तु डिप्रेशन में नहीं साथ ही यह भी हो सकता है कि आप डिप्रेशन में होते हुए भी तनाव में बिल्कुल न हों। यदि आप दुखी महसूस कर रहे हो तो जरूरी नहीं कि आप डिप्रेशन के शिकार हों।

वास्तव में डिप्रेशन स्वभाव में किसी कारण और अकारण ही आने वाला बदलाव है जो लंबे समय तक स्थाई रूप से रहें।

2017 में, अवसाद, खराब स्वास्थ्य के कारणों की सूची में सबसे ऊपर था और मन स्वस्थ न हो तो तन स्वस्थ नहीं हो सकता। जब आप मानसिक स्वास्थ्य के साथ संघर्ष कर रहे हो तब शारीरिक समस्याओं के होने की संभावना कहीं अधिक हो जाती है।

WHO के अनुसार लगभग 30 करोड़ लोग अवसाद से लड़ रहे हैं। WHO के अनुसार, प्रत्येक 4 में से 1 व्यक्ति अपने जीवन में किसी न किसी समय किसी मानसिक रोग से अवश्य पीड़ित हुआ है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अवसाद की अधिक शिकार होती हैं। सबसे भयावह बात यह है कि अवसाद से ग्रसित प्रत्येक वर्ष लगभग 8 लाख लोग आत्महत्या कर लेते हैं। 2012 में भारत में लगभग 2 लाख 58 हजार खुदकुशी के ऐसे ही आँकड़े दर्ज हुए।

अवसाद पर चर्चा भारत में एक बार फिर उठी जब महज 34 वर्ष के युवा फिल्म कलाकार ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह काफी लंबे समय से अवसाद से लड़ रहा था।

फिल्मों में उनके काम को हमेशा ही सराहा गया। साथ ही, वह मंझे हुए कलाकार होने के साथ वह एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी थे।

विडम्बना यह है कि हाल ही में उनकी अत्यन्त सराही गई फिल्म आत्महत्या का पुरजोर विरोध करती है। वे एक ऐसे पुत्र के पिता की भूमिका में थे जो परीक्षा में सफल न होने के कारण खुदकुशी की कोशिश करता है।

वह फिल्म में अपने पुत्र को यह समझाने का भरसक प्रयास करते हैं कि आत्महत्या कभी भी एक विकल्प नहीं है, पर असल जिन्दगी में वह जिन्दगी से जंग स्वयं हार गए और अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। यह बिल्कुल अविश्वसनीय है। उनके पास वह सब था जिसकी एक 34 साल का युवा इच्छा रखता हो पर मानसिक रूप से वह एक बड़ी जंग लड़ रहा था।

इस कलाकार की मृत्यु के बाद पूरा सोशल मीडिया श्रद्धांजलि के संदेशों से भर गया। मेरी एक सहेली ने बहुत खूबसूरत पंक्तियां लिखी। उसने लिखा:—जब भी खुदकुशी का ख्याल आपके दिमाग में आये, मेरा विश्वास कीजिए, मैं आपको सुनने के लिए तैयार हूँ। पर जब डिप्रेशन आपको घेरे, किसी को सच में कोई परवाह नहीं। क्या

सच में हमें परवाह है ? क्या आपको नहीं लगता कि हम उन लोगों से बचते हैं जो हमेशा दुखी रहते हैं, अपने जीवन के दुखड़े सुनाते रहते हैं और बताते रहते हैं कि वे कितने परेशान हैं। खासकर तब जब उन लोगों के पास सब कुछ हो जिसका बाकी सिर्फ सपना देखते हो।

हम सभी अपनी-अपनी परेशानियों से घिरे हैं। हम हमेशा किसी ऐसी चीज से जरूर घिरे होते हैं जो हमें दुखी करती है और जीवन की इसी जद्दोजहद में हम अपने आसपास के अवसाद से ग्रसित व्यक्तियों को पहचान नहीं पाते या उनके दुख समझने में नाकामयाब रहते हैं।

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो डिप्रेशन में रहा हो पर आपको पता तब चला जब वह दुनिया से चला गया? हाँ मैं अवश्य जानती हूँ मैंने अपने बचपन में कई अच्छे पल बिताये उसके साथ पर समय के साथ-साथ अपने-अपने जीवन एवं लक्ष्यों को पाने के लिए हम सभी अलग हो गए। उसके बाद हमारी शायद ही कभी बात हुई हो। पर एक दिन मैंने सुना कि उसने आत्महत्या कर ली। इस बात ने मुझे झकझोर दिया। क्या होता अगर मैं होती वहाँ और उससे बात कर पाती। क्या होता अगर वो किसी से अपनी मनो:स्थिति साझा कर पाता। क्या होता यदि उसको किसी ने उस दिन सुन लिया होता।

मैंने कई बाद लोगों को कहते सुना है कि आत्महत्या का निर्णय क्षणिक होता है। एक आवेश होता है वह काश वह पल चला जाता अगर उसको किसी ने सुन लिया होता।

अपने दिमाग को कहीं और लगाना अवसाद का समाधान नहीं है क्योंकि जो व्यक्ति अवसाद में है वह ऐसा करने में सक्षम ही नहीं होगा।

मुझे नहीं पता केवल बात करने से किसी का डिप्रेशन कम होता है या नहीं। पर हाँ ये जरूर सुना है कि बात करने से चीजें सुलझती जरूर हैं। मुझे चिकित्सक का तो कोई ज्ञान नहीं है, पर केवल बात कर लेना कभी-कभी हमें मुश्किल दौर में सहायता देता है। हम आम लोग किसी को मानसिक परामर्श तो नहीं दे सकते पर हम सुन तो सकते हैं। मैं यह मानती हूँ कि हमें ऐसे लोगों को खाली समय भी देना चाहिए। जब भी वे चाहे उनकी निजता का भी ख्याल रखना चाहिए। पर हाँ यह प्रण जरूर लें कि यदि हमारे आस-पास कोई काफी समय से दुखी है तो उससे अवश्य ही-बात करें।

याद रखिए अवसाद कोई विकल्प नहीं है कि हम चाहे तो इसे चुने अपितु यह व्यक्ति को यह महसूस कराता है कि वह व्यर्थ है और उनकी उपस्थिति दुनिया में नगण्य है। केवल कोई दया की चाह में अवसाद नहीं चुनता। क्या आप चुनते?

यहाँ सब कुछ बिकता है, दोस्तो रहना जरा संभल के
बेचने वाले हवा भी बेच देते हैं, गुब्बारे में डाल के
सच बिकता है, झूठ बिकता है, बिकती है हर कहानी
तीन लोक में फैला है, फिर भी बिकता है बोतल में पानी
कभी फूलों की तरह मत जीना,
जिस दिन खिलोगे..... टूट कर बिखर जाओगे
जीना है तो पत्थर की तरह जियो
जिस दिन तराशे गये..... 'खुदा' बन जाओगे।

—हरिवंश राय बच्चन

आपदा प्रबन्धन में भारतीय सर्वेक्षण विभाग की उपयोगिता

भूमिका: किसी भी राष्ट्र के सजीव भौगोलिक चित्रण उसके मानचित्रों द्वारा दर्शायी जाती है। इस कार्य हेतु राष्ट्र की सर्वोच्च मानचित्रण संस्था भारतीय सर्वेक्षण विभाग विगत 246 वर्षों से राष्ट्र के विकास कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है।



(अरुण सैनी)
तकनीकी अधिकारी

आपदा प्रबन्धन में महत्व : भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपने मानचित्रों के द्वारा देश के विकास एवं निर्माण कार्यों में जैसे जल विद्युत परियोजना, रेल सर्वेक्षण परियोजना, बांध संरक्षण, शहरी विकास, राष्ट्र के भीतर की सभी सीमाओं (जनपद, राज्य इत्यादि) के परिसीमन के कार्य, नदियों को जोड़ने सम्बन्धित सर्वेक्षण इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य करके राष्ट्र हित में अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान करता आया है। इसी क्रम में भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा निर्मित मानचित्रों का आपदा प्रबन्धन कार्यों में उपयोग करके हम स्थानीय प्रशासन, एवं राज्य सरकार के अधीन कार्य कर रही राहत बचाव एवं प्रबन्धन के कार्य में प्रमुख भागीदारी निभा सकते हैं।

मानव द्वारा प्रकृति की विनाशलीला को रोका नहीं जा सकता है किंतु उचित प्रबंधन से इसे काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है जैसा कि पूर्व में विश्व के कई हिस्सों में प्रकृति ने अपना भीषण रूप प्रदर्शित किया है। ऐसी ही प्राकृतिक आपदा से उत्तराखण्ड राज्य के विश्व प्रसिद्ध धाम केदारनाथ, हेमकुण्ड साहिब तथा आस पास के विभिन्न क्षेत्रों में जनमानस, सड़क, जन संचार माध्यमों, पशु, वन, घरों आदि को बहुत नुकसान पहुंचा था।

उत्तराखण्ड राज्य में 90% भू भाग उच्च हिमालय क्षेत्र, भूकम्प प्रभावित, हिमनद, बादल फटने के सम्भावित क्षेत्रों जैसे प्राकृतिक घटनाओं से प्रभावित है। ऐसे में प्रकृति की नजर जरा सी भी टेढ़ी हो जाने पर इन स्थानों में पहुंचना बहुत ही टेढ़ी खीर साबित हो जाता है। पहाड़ों में मुख्य सड़क मार्ग के क्षतिग्रस्त अथवा ध्वस्त हो जाने के कारण अन्य मार्गों का विकल्प नहीं रह जाता है। जिससे कि अन्य जनपदों और इलाकों से मानवीय, शारीरिक तथा अन्य प्रकार की मदद करने वाली संस्थाओं की आपदा प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंचना अपने आप में बहुत बड़ी समस्या बन जाता है। हमने इससे पूर्व गुजरात की विनाशलीला भी देखी और सुनी है किन्तु दोनों राज्यों की भौगोलिक स्थिति भिन्न होने के कारण जहां आज तकरीबन तीन माह बीत जाने के उपरान्त भी उत्तराखण्ड की स्थिति ज्यादा सुधरी नहीं हैं वहीं भौगोलिक दृष्टि से सुगम होने के कारण गुजरात में बहुत तेजी से बचाव कार्य किये गये, निर्माण कार्य भी सुगमता के कारण बहुत तेजी से करते हुए तमाम जनमानस, पशु इत्यादि को मुसीबतों से छुटकारा दिलाया गया।

प्राकृतिक आपदा होने की स्थिति में भारतीय सर्वेक्षण विभाग उन स्थानों का जहां आपदा से नुकसान हुआ हो वहां के बारे में सटीक भौगोलिक सूचना (अक्षांश, देशान्तर एवं ऊंचाई इत्यादि) के साथ-साथ विस्थापित लोगों के पुनर्वास हेतु अपेक्षाकृत समतल एवं सुरक्षित स्थानों की पहचान, (मानचित्र के आधार पर), कन्टूर का अध्ययन करके वैकल्पिक मार्गों के निर्माण में विस्तारपूर्वक योजना निर्माण कार्यों में राज्य सरकारों को विशेष सहायता प्रदान करते हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र प्रमाणिकता के साथ बनाये जाते हैं। इनमें स्थानों की भौगोलिक स्थिति, वन क्षेत्रों का परिसीमन, समुद्र तल से ऊंचाई, नदियों के मार्गों का उचित सर्वेक्षण इत्यादि बहुत ही उत्तम एवं वैज्ञानिक विधियों द्वारा किया जाता है! देश में ऐसी कई मानचित्रण ईकाईयाँ हैं जो आपदा प्रबन्धन इत्यादि कार्यों में अपनी दावेदारी प्रस्तुत करती हैं! परन्तु जब वास्तविक कार्य प्रणाली एवं योजना को सिद्ध करने की जवाबदेही की बात आती है तो भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा निर्मित स्थला-कृतिक मानचित्रों को ही आधार मान कर सभी योजनाओं को अंजाम दिया जाता है। ऐसे में हमें गर्व है कि हमारा विभाग देश के अन्य भागों के सर्वेक्षण कार्य के साथ-साथ देवीय,

प्राकृतिक आपदा में भारी नुकसान के समय भी भारत सरकार की राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन नीति में अपना सम्मानजनक स्थान बनाये हुये हैं। आधार मानचित्र के बगैर आपदाग्रस्त स्थानों का चिहनीकरण, आपदा के उपरान्त किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य करवाना नामुमकिन कार्य है। अतएव समय को सार्थक बनाते हुए हम अपने मानचित्रों तलेक्षण बिन्दुओं विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयासों से देश के किसी भी कोने में आयी प्राकृतिक आपदाओं में उचित प्रबन्धन कार्य में मानचित्र आंकड़ों के आधार पर अहम् सहभागिता निभाकर राष्ट्र का सहयोग कर सकते हैं।

नवनिर्माण

निशा व्यक्त और दिवस अंधकार
सृजक से खंडित हृदय के तार
लक्ष्यहीन है सकल संसार
बधिर समाज कौन सुने पुकार

मैं भी तस्कर तू भी चोर
मित्र लोलुप शत्रु भी घोर
स्वयं के दोष न करते घोष
अन्यथा सर्वत्र दोष ही दोष



श्रीमती बबीता उनियाल
पत्नी श्री हर्ष प्रिय उनियाल

अंध लोलुपता का नाश स्वयं से
संकीर्णता का विनाश स्वयं से
परिवर्तन आरम्भ स्वयं से
नव-निर्माण आरम्भ स्वयं से

सृष्टि पर आन पड़ी विपदा विकट
धनुष संधान का समय निकट
तानो ज्ञान का बाण अमोघ
कर अज्ञान-वध बनो निरोग

अनंत ब्रम्ह बसता तुममें
जग सारा रमता तुममे
सकल सृष्टि का तुममें प्रवास
क्या कारण है तुम हुए निराश

प्रवर्तियों को करो निर्मल अब
सृजक से जोड़ो हृदय अब
पशु-मानव से बनो मानव अब
दिव्य बनो तज दो शैशव अब।

नूतन युग करे पुकार
तज दो अब मन का भार
करो स्वयं का नव-निर्माण
स्वतः हो जायेगा जग कल्याण

भीष्मशय्या

निश्चल पड़ा था टाट में
मैं था किसी के बाट में
आकाश को तकता हुआ
बैचैन दिल था साथ मे।

धूल में लिपटा हुआ
दौड़ता-हँसता हुआ
बचपन भी आया सामने
हँसकर के हाथ थामने।

नई ऊर्जा, नई उमंग
मधुमास, सावन, शिशिर संग
अतिसय विचित्र, अतिसय अभंग
था यह जीवन का नया ढंग।

फिर आया नवयौवन, कल्पतरु बन
हुए आबद्ध मन, कर्म, वचन।
वेग से बढ़ा सब साधने, यह जीवन
फिर क्या! सामने था बस रण-रण-रण।

सबकुछ समेटा, जो भी था अधिकार सम्मत
पौरुष प्रदर्शन का यह मार्ग, सर्व सम्मत।
फिर यह प्रदर्शन सर्व से स्वमत हुआ,
और जीवन मे अहं का पोषण हुआ।

हर श्रृंग से टकराता, अट्टहास करता
गर्जना करता यह आत्ममुग्ध होकर
क्योंकि किया था धर्म का पालन जगत में
अभिभूत हो, अभिपुष्ट करता, प्रत्यक्ष मैं।

पर इस प्रदर्शन से हुआ आहत था जग
शोषितों का आर्तनाद था अब प्रतिपग
स्वधर्म अब अधर्म का पालक हुआ
पर अभिमान से अशक्त हो, कुछ न किया।

फिर ढूँढने मैं चला पार्थ को
जो मुक्त करता मुझे इस द्वंद से।
अधर्म का संहार करने आया तब पार्थ
प्रत्यक्ष कर मुझको गया धर्मदंड से।

पर पार्थ कौन
वह जो अधिकार मांगता एक मनुज था
अथवा
मेरे ही द्वंद से मुक्तिमार्ग का प्रत्यक्षीकरण।



आलोक मिश्रा
वरिष्ठ सर्वेक्षक

अंतर—गमन

बढ़ते अत्याचार पर, प्रकृति की पुकार पर
पंच तत्वों पर आरूढ़ हो, काल खड़ा इस काल पर
मूल्य शून्य हो गए, भाव विहीन जन हो गए
अंतःकरण का दमन कर, मानव से दानव हो गए
मानव जब लोभवश, प्रकृति का दमन करता है
अरण्यों का नाश कर, स्वघात के बीज बोता है
सरिता बंधन, पर्वत भंजन, विकास का द्योतक कब हुआ?
वायु में विष का मिश्रण, स्वास्थ्य वर्धक कब हुआ?
वर्ष पर वर्ष बीत गए, प्रकृति का अपमान होता जाता है
एक समय ऐसा आता है, जब घड़ा भर जाता है
वह समय अब हम पर है, कर्मों का फल निश्चित है
कोई बच के कहाँ जाए, सब कुछ समय पर अंकित है
मात्र एक ही उपाय अब, आओ करें अपने अंदर अवलोकन अब
विपदाएँ टलें या ना टलें, मुस्कराते कर जाएँगे सहन सब
गहरे ध्यान में जाने से, दिव्य श्रोत में समाने से
स्वयं बदलेंगे जग बदलेगा, प्रेम सिंधु में नहाने से।



हर्ष प्रिय उनियाल,
भण्डार सहायक

जल है, जीवन है, जीवन है जल,
रे मानव मुझको पहचान,
कर मेरा उपयोग न अपव्यय,
जिससे हो मेरा अपमान रख मेरे प्रति देव भाव,
मै देता हूँ सुखमय जीवन,
रस बन बहता नर मन में,
सुख दुख में बनता नीर नयन,
मै सबको निर्मल करता पर दूषित करता है मुझे
मनुज,
मुझसे ही उसका जीना है,
नही समझता बात सहज,
यदि मेरे शुचि शीतल जल का,
मोल न मानव समझेगा,
बिजली होगी बंद धरा पर हाथ को हाथ न
सूझेगा।

आत्म निर्भर भारत – चुनौतियां एवं सम्भावनाएं

आत्म निर्भरता हमें सुख और संतोष देने के साथ साथ सशक्त भी करती है। बहुत पुरानी कहावत है कि “पराधीन सपनेहु सुख नॉहि”। यदि हम अतीत में जाएँ तो पायेंगे कि महात्मा गाँधी जी ने कहा था— अगर हम स्वदेशी के सिद्धान्त का पालन करें तो हमारा और आपका कर्तव्य यह होगा



कौशल किशोर शुक्ला,
अधिकारी सर्वेक्षक

कि हम उन बेरोजगार पड़ोसियों को ढूँढ़ें जो हमारी आवश्यकता की वस्तुएँ हमें बनाकर दे सकते हों और यदि वे इन वस्तुओं को बनाना न जानते हों तो इन्हें इसकी प्रक्रिया भी सिखाएँ “ऐसा हो तो भारत का हर एक गांव लगभग एक स्वयं पूर्ण इकाई बन जाए।

महात्मा गांधी जी के सपने को साकार करते हुए भारत सरकार ने “मेक इन इण्डिया” स्टार्टअप और अन्य स्वरोजगार की लाभकारी योजनाओं को देश हित में लागू किया है।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी कहा है – “हर भारतवासी को अपने लोकल के लिए वोकल बनना होगा, न सिर्फ स्थानीय वस्तु खरीदना है बल्कि उनका गर्व से प्रचार भी करना है।”

आत्म निर्भरता के सपने को साकार करने हेतु प्रधानमंत्री जी ने पांच स्तम्भों की चर्चा की है। इनमें इकोनामी, इंफ्रास्ट्रक्चर सिस्टम, डेमोग्राफी और डिमाण्ड शामिल हैं।

आज जब भारत सहित विश्व के अनेक देश भयानक महामारी के प्रकोप से लगभग दूर हो गए हैं ऐसे में भारत को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में चलना होगा। जहाँ एक तरफ भारत कोविड-19 से निपटने के लिए मुस्तैद है वहीं एक पड़ोसी देश जो धूर्त व्यवहार के लिए जाना जाता है भारत की धरती पर कब्जा करने को आमादा है। चूंकि भारत वर्ष धूर्त देश के बाजार को बहुत बड़ा उपभोगकर्ता है और ऐसे दुश्मन देश की आर्थिक स्थिति पर लगाम लगाना नितान्त आवश्यक है। अतएव भारत के घरेलू उत्पाद को बढ़ावा देना होगा और चीन के सस्ते उत्पाद से प्रतिस्पर्धा करते हुए भारतीय जन मानस के मन में यह विश्वास पैदा करना होगा कि हमारी स्वदेशी कम्पनियाँ भी गुणवत्ता के साथ-साथ सस्ते सामान का निर्माण और आपूर्ति कर सकती हैं।

एक सच्चे नागरिक का परिचय देते हुए हमें भी अपने देश की दृढ़ संकल्प सरकार एवं उद्योगपतियों, के मनोबल को ऊँचा रखते हुए घरेलू उत्पादों को खरीदने में दिलचस्पी दिखाना चाहिए। इससे न सिर्फ हम लोग आत्म निर्भर होंगे बल्कि दूसरे देशों के बाजार को स्पर्धा के द्वारा उन्हें विश्व पटल पर कमजोर भी बना सकते हैं।

हमारी चुनौतियाँ:- भारत ग्रामीणों का देश है। सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्र विगत कई दशकों से महज कच्चे माल का श्रोत बनकर रह गए हैं। पारम्परिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था जो कि कृषि, हस्तशिल्प, लघु कुटीर उद्योगों पर आधारित थी, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण एवं वैश्वीकरण के आगमन के साथ लुप्त होती गई। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार नवीन कृषि तकनीकों के इस्तेमाल के बावजूद संकट का सामना कर रही है। भारत की कुल श्रमशक्ति का करीब 55 प्रतिशत भाग कृषि एवं सहयोगी कार्यों से आजीविका प्राप्त करता है। इसके बावजूद भी कृषि क्षेत्र का योगदान सकल घरेलू उत्पाद में महज 16 प्रतिशत ही है। निर्यात के मामले में भी यह 10 प्रतिशत के आसपास ही है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर भारी संख्या में पलायन भी ग्रामीण रोजगार की निराशाजनक तस्वीर पेश करती है। पूज्य गाँधीजी कहा करते थे – “भारत की आत्मा गाँवों में निवास किया करते थे। खादी वस्त्र, चरखे तथा हस्तशिल्प बुनकर इत्यादि महत्वपूर्ण रोजगार ग्रामीण अर्थव्यवस्था का ही उद्देश्य था। ऐसे वे सभी रोजगार जिनमें ग्रामीण जनताय के लिए अपार संभावनाएँ दिखती हों इनकी उपेक्षा करके हम ग्रामीण और शहरी जनता के बीच असंतुलित वातावरण को न्योता दे रहे हैं।

आधुनिक रोजगार हेतु हमारी शिक्षा प्रणाली बेहतर श्रमबल तैयार नहीं कर पाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह शिक्षा विशेषकृत नहीं होती है। हमारा प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक से ही व्यवसाय केंद्रित शिक्षण पद्धति को अपनाने के प्रति होनी चाहिए। इसके अलावा अशिक्षित लोगों के लिए वैकल्पिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। औद्योगिक प्रशिक्षण, गैर-कृषिगत कार्यों का प्रशिक्षण सूचना प्रौद्योगिकी, कौशल-विकास के लिए शिक्षण प्रशिक्षण का विशेष प्रयास करना होगा।

नवीन संभावनाएँ:- ग्रामीण विकास मंत्रालय (भारत सरकार) ने स्थानीय रोजगार देने के उद्देश्य से समय-समय पर राष्ट्रवादी एवं हितकारी योजनाओं को क्रियान्वित किया है। मनरेगा, ग्रामीण विद्युतीकरण, सड़क योजना, स्वरोजगार कार्यक्रम, हथकरघा, हस्त शिल्प सहित ऐसे कई योजनाएँ हैं जिनमें प्रतिवर्ष औसतन एक चौथाई परिवारों ने इस योजना का लाभ लिया है। मनरेगा के तहत नवीन कार्यों मसलन तालाबों का निर्माण, मछली पालन, मवेशी पालन, मुर्गीपालन जैसे कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामीण लोगों को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करती है। औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव गाँवों की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक रचना पर देखा जा सकता है। इन सबका सम्मिलित प्रभावों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता वस्तु सेवाओं की माँग लगातार बढ़ रही है। गाँवों का भविष्य रोजगार की असीम संभावनाओं से युक्त दिख रहा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा, कृषि उद्योग सहित अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ गाँवों की जरूरत महसूस की जा रही है। गाँवों का बदलता स्वरूप अब कच्चे माल के श्रोत के तौर पर नहीं बल्कि गाँव अब शहरों से मुकाबला करने को तैयार हैं। अचार, पापड़, शहद, शर्बत, जूट पटसन के थैले, आटा, बेसन, तेल, मसाले, इत्यादि अब ग्रामीण कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित होकर सीधे तौर पर बाजार में बिकने को तैयार हैं। गुड़ और गुड़ की चीनी अब ऊँचे दामों में बिक रहे हैं। सस्ता श्रमबल, सस्ती संरचना, सस्ता परिवहन व्यय कुछ ऐसी खूबियाँ हैं कि अब उद्योग जगत गाँवों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। कालसेंटर, वी•पी•ओ• इंटरनेट संबंधी रोजगार के नए अवसर ग्रामीण क्षेत्रों की ओर रुख कर रहे हैं। यह समय ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करने में क्रान्तिकारी बदलाव का होगा।

निष्कर्ष:- ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की असीम संभावनाएँ हैं और इनके साथ चुनौतियाँ भी कोई कम नहीं हैं। इनके बेहतर तकनीकी प्रबन्धन, निगरानी व दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ स्वदेशीकरण जैसे नैतिक गुणों का समावेश होना परम आवश्यक है। जिस देश में आत्मनिर्भर लोग ज्यादा रहते हैं उनकी समृद्धि देखने योग्य है। दूसरों पर निर्भर रहने वाला देश उस गरीब व्यक्ति की तरह होता है जिसके पास बेशकीमती हीरा होते हुए भी उसके मूल्य को नहीं पहचानता। जब हम सभी लोग विदेशों से आये उत्पादों का प्रयोग कम से कम करेंगे और स्वदेशी उत्पादों को ज्यादा उपयोग करेंगे तब हमारे देश का धन हमारे ही देश में रहेगा और भारत तभी आत्मनिर्भर बनेगा।

- शिखर तक पहुंचने के लिए ताकत चाहिए होती है। चाहे वह माउन्ट एवरेस्ट का शिखर हो या आपके पेशे का
—अब्दुल कलाम
- अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं माता-पिता और गुरु।
—अब्दुल कलाम
- इंसान को कठिनाईयों की आवश्यकता होती है क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी है।
- यदि चार बातों का पालन किया जाये—एक महान लक्ष्य बनाया जाये, ज्ञान अर्जित किया जाये, कड़ी मेहनत की जाए और दृढ़ रहा जाए—तो कुछ भी हासिल किया जा सकता है।
—अब्दुल कलाम

प्रगतिपथ पर भारतीय सर्वेक्षण विभाग—(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी)



गंभीर सिंह
सर्वेक्षण सहायक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार का एक ऐसा महत्वपूर्ण विभाग है। जिसकी बुनियाद पर देश के समस्त विभाग अपने क्रिया कलापों की रूप रेखा का श्री गणेश करते हैं। राष्ट्रस्तर पर बहुआयामी परियोजनाएं हो, रेल नेटवर्क विस्तारीकरण अथवा नदियों के नेटवर्किंग का विषय हो ऐसे प्रत्येक उदाहरण आपको मिल जायेंगे जहाँ पर इनके मूल में भारतीय सर्वेक्षण विभाग कार्य कर रहा होता है। यह एक ऐसा विभाग है जिसे सामान्य नागरिक, समाजशास्त्री, इतिहासकार, योजनाकार, व्यापार जगत, भूमि सुधार, रक्षा विभाग, विदेश मंत्रालय हर कोई किन्हीं न किन्हीं रूप में सेवायें लेता है।

विगत वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय सीमांकन, सीमा विवाद, राष्ट्र के भौगोलिक मानचित्र इत्यादि मामलों में पूरी सत्यनिष्ठा के साथ समस्त ऐतिहासिक मापन के आधार पर इस विभाग के सहयोग से कई मसले वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हल हो चुके हैं।

देश की आशाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल कार्य करने की व्यापक आधुनिकीकरण की दिशा में विश्व स्तर की मानचित्रण प्रणाली, एवं सटीक भौगोलिक (त्रिविध) स्थिति की जानकारी दे पाना इस विभाग की तत्परता बन चुकी है।

पूर्व धारणा से ग्रसित आलोचकों से यह बात साझा करने का वक्त है जबकि यह विभाग 1:250K, 1:50K, 1:25K को पीछे छोड़ते हुए विगत कुछ वर्षों से LIDAR, DRONE, GIS, DEM, HRSI, GPS, CORS वर्चुअल जी आई एस सिमुलेशन, आंकड़ा विश्लेषण, बाढ़ एवं आपदा प्रबंधन इत्यादि ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ उच्च मानक स्तर पर डिजिटल मानचित्र उपलब्ध कराये जाते हैं।

नमामि गंगे, राष्ट्रीय जल परियोजना, स्वामित्व योजना को आज भारत का प्रत्येक जन मानस जान चुका है। सामाजिक चेतना, साक्षरता और जागरूकता को बढ़ते रूप से एक आम नागरिक भी अपने घरों के आसपास के भू-आकृति की स्थिति पर पैनी नजर बनाये रखता है। स्थानीय प्रशासन स्तर पर अब पहले की तरह नजरी नक्शा न बनाकर उन्हें अक्षांश देशांतर के आधार पर ही दर्शाते हैं।

इस प्रक्रिया को व्यवहारिक बनाने में भा०स०वि० समय-समय पर अन्य विभागों के अभियन्ता, फील्ड वर्कर इत्यादि को उन्नत करने हेतु कार्यशाला आयोजित कर उन्हें कुशल प्रशिक्षण देकर परोक्ष रूप से राष्ट्र की सेवा करते हैं। IISM भा०स०वि० का प्रशिक्षण संस्थान है जो कि हैदराबाद में स्थित है। यह संस्थान दक्षिण एशिया क्षेत्र में एक अनूठा उदाहरण है जहाँ सर्वेक्षण एवं मानचित्रण पर आधारित अनेकों पाठ्यक्रम प्रति कैलेण्डर वर्ष में संचालित किए जाते हैं। इनमें सरकारी, गैर सरकारी क्षेत्र के युवक युवतियाँ अपनी योग्यतानुसार प्रवेश ले सकते हैं।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है। स्थापना वर्ष 1767 से लेकर 1950 तक जी टी एस सर्वे ग्रैविटी एवं मैग्नेटिक प्रेक्षण स्टार आब्जर्वेशन, कंट्रोल सर्वेक्षण, तलेक्षण, पटल चित्रण ट्रावर्स का दौर था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एरियल फोटो ग्रामितीय, सर्वे का विकास हुआ। तत्पश्चात् 1980 से 1990 के दशक में आधुनिक मानचित्रण निदेशालय का गठन किया गया। 1990 से 2000 तक जीपीएस, डिजिटल लेवलिंग, सैटेलाइट इमेजरी इत्यादि पर कार्य प्रारम्भ हुआ। विगत 20 वर्षों में अत्याधुनिक सर्वे मानचित्रण प्रणाली पर निरन्तर शोध एवं प्रयोग होते आ रहे हैं। राष्ट्रव्यापी कार्य योजना को प्राथमिकता देते हुए नये-नये निदेशालयों का गठन किया गया है। डेट केंद्रों एवं प्रोजेक्ट सेल का खोला जाना इस बात का परिचायक है कि नगर से लेकर राष्ट्र स्तर तक प्रायः सभी परियोजनाओं के प्रारंभिक सर्वे को लेकर अन्य दूसरी संस्थाएँ भा०स०वि० से प्रारंभिक आँकड़ा की माँग करती हैं। विभाग की कार्यप्रणाली पूर्णतः तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधियों पर आधारित होती है।

वर्तमान समय में "स्वामित्व योजना" का शुभारम्भ करते समय भारत के माननीय प्रधान मंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बड़ी बारीकी से भा०स०वि० के महत्व को समझा और सराहा है। भारतीय इतिहास में "स्वामित्व योजना" एक ऐसी पहल है जिसमें हर किसी ग्रामीण परिवार के मुखिया को उसके आबादी भूमि पर बसे हुए घर, खलियान, गौशाला, चौपाल का विधिक अधिकार पत्र स्वामित्व प्रमाण पत्र के द्वारा दे दी जायेगी। भारत वर्ष के सभी जिलों और गाँवों के प्रत्येक घर का मानचित्र ड्रोन तकनीकी से किया जाना है जिसमें इसकी बागडोर का जिम्मा भा०स०वि० को सौंपा गया है।

आइए, हम सभी सर्वे परिवार के अभिन्न अंग अपने विभाग पर गर्व महसूस करते हुए इसके सफल विकास एवं कार्यप्रणाली को निरन्तर आगे बढ़ाने की दिशा में सदैव तत्पर रहें।

"जय सर्वेक्षण"

“असल की नकल” : व्यंग

वंदनीया / वंदनीय पाठकों,

आपने यह जरूर सुना होगा कि नकलची बंदर, नकली सामान भूमि की नकल वगैरह



कौशल किशोर शुक्ला,
अधिकारी सर्वेक्षक

—वगैरह किन्तु नकल के भांति-भांति रूपों से आज हम आपको दीदार कराना चाहते हैं। सबसे पहले यह जान लें कि नकल करना इतना भी आसान नहीं होता जैसा आम लोग सोचते होंगे। जी हाँ नकल करने के लिए अक्ल की खास जरूरत होती है।

मसलन मैं आपको एक परीक्षा भवन के अंदर परीक्षार्थी और उसके सहयोगी के बीच बेहतर ताल-मेल का नमूना पेश करता हूँ। पात्र काल्पनिक हैं :-

बबलू : यार तू मेरा पक्का दोस्त है तुम्हे दोस्ती की कसम आज परीक्षा देने तेरे भरोसे ही आया हूँ । तू मदद करेगा ना

टिंकू: भाई दोस्ती की कसम, मैं तेरी मदद करूंगा।

बबलू: कैसे ?

टिंकू: जैसे तू कहे वैसे ।

बबलू: बहु विकल्पी प्रश्न के उत्तर 1,2,3 में कौन सही होगा।

टिंकू: वेरी सिम्पल, मैं पेन के रिफिल को एक बार बंद करूँ तो उत्तर-1 है इसी प्रकार।

नकल का दूसरा उदाहरण:-यह घटना 9 वीं कक्षा की है। विद्यार्थी कलम के ढक्कन, जूते के जुर्राब, कालर के मोड में नकल पर्ची लेकर परीक्षा दे रहा था। परीक्षक महोदय की निगाह पड़ी और उन्होंने उसकी चतुराई की सराहना की विद्यार्थी खुश हुआ लेकिन अगले ही क्षण गुरुजी ने कहा बालक तुझे मैं तभी माफ करूंगा बशर्ते कि तुम एक नई उत्तर पुस्तिका पर शेष समय 40 मिनट में इसको नकल करके लिख देगा। विद्यार्थी के होश उड़ गए। बेचारा छुप छुप कर 2 घण्टे में जो कुछ लिखा उस पर पानी फिर गया।

नकल को रोकने के लिए ही कापी राइट एक्ट बना, हम चतुर लोग इसको भी ताक पर रख कर धडल्ले से नकल करते हैं मसलन PARLE-G को PYRLE-G, डाबर ऑवला तेल को दरबार ऑवला तेल, कोलगेट को कूलगेट के नाम से, बाकी बाहरी आवरण हू, ब, हू रहता है।

ग्रामीण क्षेत्र में तो खुले आम कहा जाता है कि असली या नकली लोगे? कई बार तो खुद को यकीन नहीं होता कि असली कौन और नकली कौन सा सामान है? कुछ विद्वान मानते हैं कि माल वही चोखा जो उँचें दाम पर बिक रहा हो। भला बताइए ग्राहक बेचारा कहाँ कहाँ गुहार लगाए। अतएव इसके चक्कर में दुनियाँ दिन रात घूम रही है। नतीजा आना शेष है।

- उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जा देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती है अर्थात् हिन्दी।
- पवित्रता, धैर्य तथा प्रयत्न के द्वारा सारी बाधाएं दूर हो जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं कि महान धीरे-धीरे होते हैं।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

चीन देश को दो टूक

मानवता का दुश्मन है तू
चीन तेरी औकात है क्या?
घुसकर मारते हैं हम अब, रूकते थमते हैं नहीं
शिखर और हिमपात हो क्या.....

भारत की अगर घूम गई
तो चीनी तेरी बिसात है क्या
तू सिर्फ एक व्यापारी है, इतनी ही दुनियादारी है
मर जायेगा बेमौत, बंद करूँ तेरा व्यापार क्या?
तीन फुटी सेना के दम पर,
नकली गोला-बारुद चलाकर
जीत सकेगा जंग क्या
घुसकर मार चुकें हैं हम, पाकिस्तान से पूछा था क्या
सन् बासठ अब रहा नहीं, संसद वैसा रहा नहीं
नव भारत का देश है चीनी
कान खोलकर सुन ले तू तेरी नीयत में बदबू
भूगोल बदलकर रख देंगे ,
रच देंगे इतिहास नया
जंग हम चाहते नहीं, मैदान छोडकर भागते नहीं
गीदड़ भभकी देखी, है हमनें, तुझसे अब घबराते नहीं ।

डेंगू भइया

जरा संभल कर रहना, आने वाले हैं "डेंगू भइया"
सलाह बड़े काम की साहब, लेता हूँ न एक रूपइया
करोना एक नई महामारी, व्याकुल दुनिया है बेचारी
इजी डेंगू प्रकटशील हो आई करिए रोकथाम तैयारी ।।

अतएव,

बार-बार विनती करता हूँ आपसे कि
एक बेल "गिलोय" और दूजा पपीता पौध
प्रिय, अपने घर-बागान में लगाइए
आलस भरपूर या, मजबूरी और अन्य
बात श्रीमान जी यह औषधि आज ही,
बाजार से ले आइए ।।
डॉक्टरी जांच, पड़ताल हो बाद में,
पहले से ही अपनी इम्यून को बढ़ाइए
मस्त रहें आप सब-लोग ठीक ठाक रहें,
ऐसे किसी रोग से न डरें- न डराइए ।
मुंह पर मास्क, और हाथ खूब साफ हो
दो गज दूर रहें, अपने व्यवहार में हर रोज, ले आइए ।



अजय त्यागी,
वरिष्ठ सर्वेक्षक



राकेश कुमार तनेजा,
वरिष्ठ सर्वेक्षक

पर्यावरण चेतना

पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ
वन उपवन को सघन बनाएँ
उजड़े बाग-बगीचे में फिर
खोयी हरियाली को लाएँ
पर्यावरण को स्वस्थ बनाएँ ।।

वृक्ष धरा के हैं आभूषण,
मुक्त करें ये विविध प्रदूषण
भौगोलिक रचना में फिर से
जन्मदिवस पर पौध लगाकर
पर्यावरण-दिवस मनाएँ-दूर हो सारी बाधाएँ ।।



श्री राजेश कांगा
अधिकारी सर्वेक्षक

सूखे कुओं तालाबों में हम
जल संरक्षण विधि अपनाकर
बंजर भू पर फसल उगाएँ
वृक्ष नहीं तो वर्षा संकट
काले मेघ कहां से लाएँ?
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ ।।

वन महोत्सव का पर्व मनाएँ,
वन और जल के सार को समझें,
अग्नि प्रदूषण रहित बनाकर
खत्म करें सारी बाधाएँ
पर्यावरण को स्वच्छ बनाएँ ।।

“श्रावण”—कजरी गीत

सावन आयो अधिक सुहावन,
वन मा नाचत लागे मोर
वन उपवन सव हरित भयो है
मन मोहक चहुँ ओर, कि,
सावन आयो अधिक सुहावन.....

उमड़ घुमड़ के, बरसे बदरा....
उमड़ घुमड़ के, बरसे बदरा....
पवन मचाये शोर — सखी रे....
पवन मचावत शोर, कि सावन आयो....

ग्वाल बाल संग गइया चरायँ....
कृष्ण जी राधा नन्द किशोर, सखी रे...
कदम्ब डाल पर झूला पड़ा है,
झूलत राधा-किशोर, कि
सावन आयो अधिक सुहावन,

मात जशोदा, माखन छुपाएँ....
हेरत कृष्ण जी चोर सखी रे
खोजत बालकृष्ण चितचोर कि,
सावन आयो अधिक सुहावन,
वन मा नाचन लागे मोर ।।



कौशल किशोर शुक्ला,
अधिकारी सर्वेक्षक

अनमोल सीख

धड़ाम—धड़ाम करके श्यामला के हृदय में जैसे पत्थर गिरे जा रहे थे। दिमाग संज्ञाशून्य सा था तथा चेतनाशून्य होने का भी आभास सा हो रहा था। बहू के बोले एक—एक शब्द उसके हृदय को भेद रहे थे। श्यामला की प्यारी बहू जिसे वह सारी जिंदगी पलकों पर बिठाये रही ससुर का स्वर्गवास होते ही अभी कुछ समय न गुजरा था कि बहु का प्रचंड अवतार श्यामला के सामने था। गलती इतनी थी श्यामला की कि उसने बहु को गैर समय देर से सोने को लेकर टोक दिया। उसके बाद तो जैसे घर में भूकंप ही आ गया। बहू ने उसे कटु शब्द बोलने में कोई कसर न छोड़ी। उसके तीक्ष्ण प्रहार अभी भी जारी थे मम्मी आप अपने काम से मतलब रखिए। बीस साल हो गये मुझे इस घर में आये। आपकी हिम्मत कैसे होती है मुझे इस तरह टोकने की। आईदा ऐसी गुस्ताखी की तो भूल जाऊँगी आप मेरी सास हो अपनी हद में रहना सीखिए और मेरी जिंदगी में हर समय दखल देना बंद कीजिए कहकर अपने बैडरूम का दरवाजा उसने धड़ाम से बंद किया।



सीमा सिंह,
वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन

श्यामला की आँखों से अपमान के आंसू बह निकले सोचा न था कि अपने पति के स्वर्गवास के बाद वह इतनी निरीह व असहाय हो जायेगी। अपनी बाकी जिंदगी जीने के लिए उसे इतनी कठिनाई होगी। आखिर श्यामला भी कभी बहू बनकर इस घर में आई थी तब उसकी सास ने भी पहले दिन ही उसे जता दिया था कि देर से उठने की आज्ञादी सिर्फ उनके बेटे को थी श्यामला को नहीं। पर वो तो अपनी सास के ओदश के आगे चूँ भी नहीं कर पाई थी। और वही अपेक्षा वह अपनी बहू से कर रही थी। पर कहां जानती थी कि जमाना अब वो नहीं रहा। झर—झर कर श्यामला की आँखों में आंसू बह निकले तथा मस्तिष्क इस प्रश्न का उत्तर ढूढ़ने लगा कि गलती किसकी है। उनकी या बहू की। जब मन ही मन तर्क वितर्क करके भी उत्तर न सूझा तो वह बुझे मन से उठ गई। सर में तीक्ष्ण दर्द था। मुँह धोया तो कुछ आराम मिला तो अपने लिए एक कप चाय बनाई। श्यामला जी का बेटा राकेश दो दिन के ऑफिस के काम से शहर से बाहर जा रखा था व पोता शुभम तो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए दिल्ली में था। घर में अभी मात्र दो ही प्राणी थे। बहू और श्यामला।

घर का और रसोई का काम तो दोनो सास बहू ने मिलकर सुबह ही कर दिया था। उसके बाद ही बहू नाश्ता करके अपने कमरे में लेट गई और उसकी आँख लग गई यहीं बात ही श्यामला को खल गई की गैर टाइम कैसे बहू सो गई हमारे जमाने में तो कभी ऐसा नहीं होता था हालांकि आज से पहले बहु ने कभी इतने तीक्ष्ण स्वर में उससे बात न की थी।

अब श्यामला ने थोड़ी देर के लिए टी•वी• खोलकर भजन का चैनल लगा लिया। पर जब मन ही इतना खिन्न था तो कहां भगवान में ही रमना था। अतंतः टी•वी• का स्विच भी ऑफ कर दिया।

घर का माहौल बोझिल था। सोचा चलो अब तक मेरी दोनो सहेलियाँ भी पार्क में बैठने आ गई होंगी। चार बजे नित्यप्रति श्यामला व उसकी दो सहेलियाँ मालती व गरिमा पार्क में बैठकर अपने सुख दुख साँझा करती थी।

हालांकि मालती उन दोनों से उम्र में दस साल बड़ी थी अतः दोनो सहेली होते हुए भी दीदी कहकर बुलाती थी। अब श्यामला अपने दुख व अवसादों का पिटारा लेकर पंद्रह मिनट पहले ही पार्क में पहुँच गयी। श्यामला की किस्मत अच्छी थी कि आज सौभाग्यवश श्यामला की दोनो सहेलियाँ भी समय से पहले ही पार्क पहुँच चुकी थी।

श्यामला का उतरा मुँह दोनों ने देख लिया। क्या बात है श्यामला, सुनते ही अपनापन मिलते ही श्यामला के फिर झर—झर आँसू बहने शुरू हो गये। बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटा कर श्यामला ने दिन का किस्सा अपनी सहेलियों को सुनाया। बताओ दीदी, वो मालती से मुख्रातिव थी। मैं भी कभी बहू थी पर मजाल जो कभी अपनी सास को मैंने झूठ में भी किसी बात पर जवाब दिया हो। हम पर भी तो घर में कितनी तरह के प्रतिबंध थे। देर से न उठो, ऐसे कपड़े पहनो हमेशा सर पर पल्लू रखो। ठीक से चलो, कहीं पति के साथ भी बाहर घूमने की आज्ञादी नहीं थी। फिर भी अक्षरशः मैंने उनकी आज्ञाओं का पालन किया पर जरा इस कल की आयी बहु को तो देखो।

आने दो राकेश को उसको ही इसकी शिकायत करूँगी। बताइये क्या उसे मुझे ऐसे कठिन शब्द बोलने का अधिकार है। मालती और गरिमा ने एक दूसरे को देखा कि क्या कहें या क्या न कहे। कुछ पल रूक कर आखिर मालती ने गला खंखारा और श्यामला से मुखातिब हुई और बोली एक बात बताओ श्यामा वो कभी-कभी उसे अपनेपन से श्यामा के नाम से बुलाती थी। क्या जब तुम्हारी सास ने तुम पर अपनी आशाओं वा आदेशों के पहाड़ थोपे तो क्या तुमने उनकी बातों का सहर्ष स्वीकार किया या तुम्हें उससे कुछ असुविधा हुई और तुमने उससे मजबूरी में स्वीकारा।

ऐसा सुनना था कि श्यामला के पूर्व दुखद अनुभव पुनः बाहर निकल आये कहाँ दीदी, प्रतिबंध की जिंदगी जीना किसको अच्छा लगता है। उस समय मुझे उन सब चीजों से कितनी असुविधा हुई इसका अंदाजा सिर्फ मुझे है हर चीज में उनकी टोक पड़ जाती थी। काम अच्छा करो या बहुत अच्छा उनकी आशाओं की कसौटी पूरा उतर नहीं पाती थी। हमेशा घुट-घुट के ही जीवन जिया। मर्जी की स्वच्छन्द जिंदगी कौन नहीं चाहता और उस समय तो सयुक्त परिवार हुआ करते थे कितने, सास-ससुर (चाचा, ताऊ) देवर, जेठ घर में इकट्ठे रहते थे। बड़ी मुश्किल से वो समय निकाला। सारी जवानी की आयु उसमें ही स्वाहा हो गयी।

अब पुनः मालती जी ने कहा सुनो श्यामा जैसे तुम्हें अपनी परतंत्र जिंदगी का मलाल है, जबकि उस समय, वक्त ही वैसा था फिर तुम आज के युग में अपनी बहु से वो ही सब उम्मीद क्यों रखती हो जो किसी समय तुम्हारी नजर में ही सही नहीं थी।

श्यामला ने कुछ कहने को मुँह खोला पर मालती जी ने पुनः कहना शुरू किया, सुनों श्यामा अगर पचास साल पहले की पद्धति को तुम आज के समय में भी चलाने का प्रयास करोगी तो समझ लो तुम्हें इससे दुख के अतिरिक्त कुछ न मिलेगा। तुम तो पढ़ी लिखी हो क्यों नहीं विकसित सोच के साथ आज में जीने का प्रयास करती। मानती हूँ तुम अपनी बहु को हृदय से बहुत प्यार करती हो पर तुम्हारी कुछ कमियों का दर्पण आज तुम्हें दिखाना चाहूँगी मेरी बहन। बहु की तारीफ के काम जो वो करती है वो तो तुम किसी से नहीं करती परंतु उसकी कोई भी कमी बुराई वो तुम किसी को भी बताने को उतावली रहती है। चाहे वो तुम्हारे घर की कामवाली हो। तुम्हें पता है तुम जो बात उससे करती हो वो जितने घर काम करने जाती ही उतने घर वो बाते बताती है क्या वो तुम्हें और घरों के किस्से नहीं सुनाती? पर..... श्यामला ने कुछ कहना चाहा पर शब्द उसकी जुबान पर न आ सके। मालती ने बातों का सिरा पकड़ कर कहा बहु की जो बुराई तुम करती हो वो क्या वापस उसके कानों तक नहीं पहुँचती होगी। क्या इज्जत रह जाती होगी उसके मन में तुम्हारी जब वो तुम्हारे द्वारा की गई बुराई दूसरों की जुबान से सुनती होगी। श्यामला की नजरें अब झुकने लगी थी।

सुना श्यामा मालती जी ने गरम लोहे पर चोट करते हुए कहा ये कैसा व्यवहार की बुराई सबसे करो पर तारीफ किसी से नहीं जबकि जहां तक मैं जानती हूँ आज से पहले कभी तुम्हारी बहु ने तुम्हें अपशब्द नहीं कहे। कहो क्या मैं गलत कह रही हूँ श्यामला जी की जुबान को तो जैसे लकवा मार गया था। आखिर आज उन्हें ही आईना देखना जो मिल रहा था। मालती जी ने कहा मेरी बात को गाँठ बांध लो बहन अपनी बीते कल की जिंदगी के आधार को आज का व्यवहार न बनाओ। जो प्यार हृदय में सहेज कर अपनी बहु के लिए रखती हो उसे बाहर भी प्रदर्शित करो तो देखना उसके कितने सकारात्मक परिणाम पाओगी। और हाँ चलो अब घर चले काफी देर हो गयी है हम भी घर चलते हैं कहकर मालती जी ने श्यामा के सिर पर हाथ फेरा श्यामला भी मालती के गले लग गई।

शाम के छः बज चुके थे जब श्यामला घर पहुँची। अंदर देखा तो बहु घबराई हुई चहल कदमी कर रही थी। सास को देखते ही चैन की सांस ली परंतु आँखों से टप-टप आँसू बह निकले। घबराहट उसके मुख पर साफ अंकित थी कहाँ चली गई थी मम्मी कह कर वह हिचकिचायाँ लेकर रोने लगी। आँसुओं का बांध बह गया था। आखिर श्यामला ने घर वापिस आने में कभी इतनी देर न लगाई थी। मैंने आपको जो अपशब्द बोले उसके लिए मुझे माफ कर दीजिए। पता नहीं इतना बड़ा अपराध मुझसे कैसे हो गया। कहकर वह फूट-फूट कर रो रही थी श्यामला ने उसे गले लगा लिया और बोली अरे पता नहीं क्या-क्या सोचती है अरे टहलने जरा दूर तक निकल गयी थी

इसलिए देर हो गयी और रही बात माफ करने की तो क्या मेरी बेटी भी किसी गुस्से में मुझे इतने शब्द बोलती तो क्या उसे मैं माफ न करती। अरे उन शब्दों को तो मैं कबका भूल गई पता नहीं तू काहे को हलकान है और जा शाम का समय है रोते नहीं, जा मुंह धो मैं तेरे लिए अच्छी से चाय बनाती हूँ और हाँ बहुत दिनों से तूने मेरी पसंद की कढ़ी नहीं बनाई जो तू बहुत स्वादिष्ट बनाती है। आज मेरे लिए कढ़ी बनाना। दोनों के चेहरे पर इस समय मुस्कुराहट थी। आखिर दोनों के मन के कलुष आँख के रास्ते धुल जो चुके थे।

वक्त

घर बनाने में वक्त लगता है,
पर मिटाने में पल नहीं लगता।
दोस्ती बड़ी मुश्किल से बनती है,
पर दुश्मनी में वक्त नहीं लगता।
गुज़र जाती है उम्र रिश्ते बनाने में,
पर बिछड़ने में वक्त नहीं लगता।
जो कमाता है महीनों में आदमी,
उसे गंवाने में वक्त नहीं लगता।
पल-पल कर उम्र पाती है जिंदगी,
पर मिट जाने में वक्त नहीं लगता।
जो उड़ते हैं अहम के आसमानों में,
जमीं पर आने में वक्त नहीं लगता।
हर तरह का वक्त आता है जिंदगी में,
वक्त के गुजरने में वक्त नहीं लगता।



विजय सिंह
लोकल लेबर

- दान देने का स्वभाव, मधुर वाणी, सब्र और उचित अनुचित की पहचान मनुष्य के स्वभाविक गुण हैं इसलिए ये चार बातें अभ्यास से नहीं आती हैं।
—चाणक्य
- मनुष्य की प्रतिष्ठा उसकी छाया की भांति है, जब वह मनुष्य के आगे चलती है तो बहुत बड़ी हो जाती है और जब उसके पीछे चलती है तो बहुत छोटी हो जाती है।
- मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म रहने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता।
—चाणक्य
- हिंदी के माध्यम से ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

सावन की बेला

चहुँ ओर हरियाली फैली, सावन की इस बेला में,
रिमझिम पड़ती बूँदे हर्षायें, सावन की इस बेला में,
ओम नमः शिवाय उच्चारण,
अर्न्तमन को झंकृत करता है
अनवरत शान्ति हमारे
तन और मन में भरता है,
भोलेनाथ का पूजन, नमन करें हम
सावन की इस बेला में,
अन्तः कलुष त्याग हम, भक्ति सुमन अर्पण करें,
सावन की इस बेला में,
चहुँ ओर हरियाली फैली, सावन की इस बेला में,
रिमझिम पड़ती बूँदे हर्षायें, सावन की इस बेला में,
कजरी की सुमधुर तानें,
कानों में अमृत घोल रही
सावन में झूले, झूलती सखियाँ
मन आहवालित कर घूम रही
इस मास में झूला झूल कर सखियाँ, कजरी खेलने जाती है,
दुख दर्द बिसार कर पलभर चाहे, अपने भाग्य पर इठलाती है
जतन से सोलह श्रंगार करती है वो,
सावन की इस बेला में,
चहुँ ओर हरियाली फैली, सावन की इस बेला में,
रिमझिम पड़ती बूँदे हर्षायें, सावन की इस बेला में,
एक विरहिन है जो कसक भरी
पीहर जाने को तड़प रही
हृदय आतुर है माँ से मिलने को
पर पाँव में बेड़ी पड़ी हुई
वो हृदय में उठती पीड़ दबाये कर्तव्यों को निभाती है
और यादों के ही झूले झूल, निज मन की प्यास बुझाती है
विस्मृत यादों को बिसराये, सावन की इस बेला में
चहुँ ओर हरियाली फैली, सावन की इस बेला में,
रिमझिम पड़ती बूँदे हर्षायें, सावन की इस बेला में,



सीमा सिंह,
वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन

- मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ परन्तु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो यह मैं नहीं सह सकता।
—विनोबा भावे
- मैं हिन्दी के जरिए प्रांतीय भाषाओं को दबाना नहीं चाहता हूँ, किन्तु उनके साथ हिंदी को भी मिलना देना चाहता हूँ।
जिससे एक प्रांत दूसरे के साथ अपना सजीव संबंध जोड़ सके। इससे प्रांतीय भाषाओं के साथ हिंदी की भी वृद्धि होगी।
—महात्मा गांधी



अशोक सिंह
पति श्रीमती सीमा सिंह

सिटी हास्पिटल के बड़े हाल में बेड नम्बर 23 पर स्टैण्ड पर टंगी ग्लूकोज की बोतल से एक-एक बूंद ग्लूकोज धीरे-धीरे गिर रहा था। नर्स ने आकर थोड़ी स्पीड बढ़ा दिया तो मैंने भी पूछ लिया कि दीदी अब कैसी तबियत है। नर्स अपने काम से विचलित हुये बिना ही सिर हिला के इशारा कर दिया कि कुछ सुधार है। वहीं पास बैठी सुजाता ने मेरे सवाल का जबाब देना शुरू कर दिया थोड़ा सुधार है परन्तु दो दिन से होश आता है पर कुछ बोलती नहीं है। बस आंखों से आँसू बहाती रहती हैं इतना कहते-कहते सुजाता भी रोने लगी मैं भी सुजाता के बराबर में थोड़ी सी जगह बना कर बेंच पर बैठ गयी। डॉक्टर का राउण्ड होने वाला था इसलिये नर्स ने आकर हम लोगों को बाहर जाने को कहा परन्तु उसका कहना औपचारिकता मात्र ही थी। यह भी कह सकते हो कि हमारे देश में सभी को नियम का पालन करना बोज़ जैसा लगता है। कुछ ऐसे भी होते हैं जो नियम को तोड़ने में अपनी शान समझते हैं। इन्हीं में कुछ उस हाल में भी रहे होंगे, तभी जो नर्स के कहने के बाद भी मुश्किल से चार लोग ही बाहर गये होंगे। उन दो चार लोगों में मैं स्वयं भी थी। सुबह के ठीक 10 बजे थे और डॉक्टर श्रीवास्तव ने अगले दावाजे से हाल में प्रवेश किया ही था कि उनके साथ वो दो चार लोग भी अन्दर आ गये जो नर्स के कहने पर बमुश्किल बाहर गये थे। डॉक्टर श्रीवास्तव के साथ दो नर्स एक सहायक डॉक्टर भी अन्दर आये थे। उन्होंने हाल में घुसते ही एक एक कर मरीजों को देखना शुरू कर दिया। डॉ. श्रीवास्तव भले आदमी प्रतीत हो रहे थे। बहुत ही मधुरता के साथ मरीजों से बात कर रहे थे। अपने सहायक डॉक्टर को जरूरी निर्देश देने के बाद आगे बढ़ते जा रहे थे आपातकालीन वार्ड होने के बाद भी सिटी हॉस्पिटल के इस बड़े हाल में बमुश्किल सात मरीज थे। आखिरी बेड नं•23 ही था। जैसे ही डॉ० श्रीवास्तव बेड नं•23 पर पहुंचे, फाइल उठा कर दवाइयों की जांच करने लगे। मैं भी अन्य की भांति अपने मरीज के निकट पहुँच भीड़ में शामिल हो चुकी थी। डॉ० श्रीवास्तव ने अपने सहायक डॉ० को कुछ दवाइयां बदलने के लिए कह रहे थे। सुजाता ने तभी डॉ० से पूछा था डॉ० साहब अब कैसी तबियत है माँ जी की। अब कोई खतरा तो नहीं है? दो दिन से कोई बात भी नहीं कर रही हैं, बस आंखों से आँसू बहते रहते हैं। एक मिनट में एक साथ इतने सवाल तो डॉ० साहब से उनके एम०डी० कोर्स में भी शायद नहीं पूछे गये होंगे। डॉ० साहब ने मुस्कराते हुए कहा, नहीं अब खतरे की कोई बात नहीं है। आप लोग चिन्ता ना करें ईश्वर चाहेगा तो गंगू ताई जल्द ही पूर्ण स्वस्थ होकर अपने घर जा सकेंगी। फिर डॉ० साहब ने बेड पर लेटी गंगू ताई से मुखातिब होते हुए पूछा ताई कैसी तबियत है अब कुछ अच्छा महसूस कर रही हो? गंगू ताई की पलकें खुल गयी थी, उन्होंने डॉ० की तरफ देखने की कोशिश तो बहुत की, परन्तु उनकी आंखों से निकलने वाले आशुओं का सैलाब उनकी पलकों के बांध को तोड़ उनकी तकिया को भिगोने लगा था। आखिर डॉ० साहब का सवाल ही ऐसा था। यद्यपि डॉ० श्रीवास्तव सहृदय व्यक्तित्व के स्वामी थे और अपने समस्त ज्ञानार्जन के बल बूते किये गये इलाज के कारण इस विश्वास के साथ पूछा था कि वाकई गंगूताई स्वास्थ्य लाभ लेकर अच्छा महसूस कर रही होगी। परन्तु गंगू ताई को यह वाक्य नशतर की तरह चुभा था। गंगूताई अच्छा कैसे महसूस कर सकती थी।

गंगूताई का पूरा नाम गंगा देवी था। वह राजनगर की रहने वाली थी। उनके दो पुत्र थे। दूसरे पुत्र के जन्म के कुछ समय बाद ही उनके पति की रोड एक्सीडेंट में मृत्यु हो गयी थी। गंगा देवी ने जीतोड़ मेहनत कर दोनों की परवरिश की थी। पढ़ाया लिखाया था। अपने संस्कारों से भी नवाजा था गंगादेवी मृदुभाषी कुशल, संस्कारी महिला थीं, इसी लिए पूरा मोहल्ला उन्हें प्यार से गंगूताई कहता था।

बड़े पुत्र का नाम रमेश था जो उनके साथ ही रहता था और टैक्सी चालक का कार्य करता था, बीस वर्ष पूर्व रमेश की शादी सुजाता से हुई थी जिससे इसको दो पुत्र एक साढ़े तीन वर्ष का, एक डेढ़ वर्ष का था। गंगूताई का छोटा पुत्र महेश फौज में था। करीब एक वर्ष पूर्व उग्रवादियों से लोहा लेते हुए उसे वीरगति मिली थी। उसके उत्कृष्ट शौर्य को देखते हुए सरकार ने उसे वीर चक्र से नवाजा था। उसकी शहीदी पर गंगूताई रोई नहीं थी। दुःख तो मां को बहुत होता है परन्तु गंगूताई कहती थी कि मेरा पुत्र अपनी मां के काम नहीं आया तो क्या! भारत माता के काम तो आया। सरकार से पुरस्कार लेते हुए भी गंगूताई की आंखों की चमक में उनके पुत्र को शौर्य गाथा पढ़ी जा सकती थी। आखिर गंगूताई ने अपने पुत्रों को संस्कार ही ऐसे दिये थे।

रमेश भी कुशल टैक्सी चालक तो था ही एक हष्ट-पुष्ट नौजवान था। व्यवहार कुशल होने से लोग उसकी इज्जत भी गंगूताई की तरह करते थे। लोगों की हर सम्भव मदद करना उसकी सदा से इच्छा रही थी। उसकी यही इच्छा कभी-कभी उसका अपना नुकसान भी करवा देती थी। उसकी लोगों की भलाई करने प्रेरणा भी तो कहीं

ना कहीं गंगूताई ही थी। मां से बड़ा शिक्षक भी तो कोई नहीं होता और उसकी इसी मदद की आदत से इस बार उसकी जान पर बन आयी। चार दिन पहले ही उसे भी इसी हॉस्पिटल की इमरजेंसी में भर्ती कराया गया था जहां से डॉक्टरों ने जवाब देते हुए उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया गया था। रमेश को सुजाता के भाइयों ने ऑल इण्डिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में भर्ती कराया था। यद्यपि इसमें सरकार ने भी उनकी मदद की थी।

रमेश चार दिन पूर्व ही दो लड़कियों को और दादी को अपनी टैक्सी में बैठा कर जंगल के रास्ते शहर जा रहा था। लड़कियां पड़ोस के ही कस्बे की थी। उनकी नीट की परीक्षा थी। दोनों लड़कियां पढ़ने में अच्छी और काफी बुद्धिमान थी। दोनों को ही अपनी परीक्षा में पूर्ण सफलता की उम्मीद थी। जंगल का रास्ता करीब 18 किमी लम्बा था। रमेश धैर्यपूर्वक कुशलता से गाड़ी चला रहा था। सुबह के करीब पांच बज रहे होंगे। अंधेरा बस छंटने ही वाला था, टैक्सी अंधेरे और सन्नाटे को चीरते हुए आगे बढ़ती जा रही थी। लड़कियां कभी-कभी थोड़ा डर रही थी। जंगल से आने वाली आवजें डरावनी तो होती है। उनकी दादी उन्हें साहस बंधा रही थी और कह रहीं थी कि चिन्ता मत करो रमेश भैया तो हैं साथ में। रमेश भी उनकी बातें सुनकर मुस्करा रहा था। कभी-कभी तो उनका मजाक भी बना रहा था। फिर उन्हें शान्त करते हुए कहता कि बच्चों चिन्ता मत करो, गाड़ी में तुम्हारे रमेश भैया हैं। उसे नहीं पता था कि बच्चियों का यह अंदेशा सच भी हो सकता था। अचानक रमेश ने बीच जंगल में बीच रोड़ पर गाड़ी में जोरदार ब्रेक लगाई। चूं-ऊं-ऊं की आवाज के साथ नागिन के जैसे गाड़ी सड़क पर लहरा गई टायरों के घिसने के निशान सड़क पर दस बारह फीट तक बन चुके थे। रमेश गाड़ी को वापस मोड़ कर लौटने की कोशिश करने लगा था तभी अचानक चार लड़के हाथ में तमंचा लिये सड़क पर आ चुके थे। सड़क पर लकड़ी की टहनियां और पत्थर डालकर इन्हीं लड़कों ने रास्ता अवरुद्ध किया था। यदा-कदा इस जंगल से लूट की घटना की सूचना पहले भी आती रही है परन्तु पकड़ा कोई नहीं जाता था। इसमें पुलिस की कुशलता होती थी या चोरों की, यह राज आज भी कोई नहीं जानता यह आज भी राज ही है। चारों लड़के मुंह ढके हुए चोरों के लिबास में थे, यद्यपि वो भी आम इन्सान जैसी ही कद काठी के थे। उनमें से एक ने गाली देते हुए रमेश को गाड़ी से बाहर निकलने को कहा। रमेश ने उन्हें थोड़ा समझाने की कोशिश की, कि बच्चियों के भविष्य का सवाल है उन्हें पेपर देने जाना है ज्यादा पैसे भी किसी के पास नहीं है, आपको हमसे कुछ नहीं मिलेगा हाथ जोड़ कर जाने देने के लिए गिड़गिड़ाने लगा, भैया जाने दो, मैं आपसे विनती करता हूँ इन बच्चियों की तरफ देखो ये आपकी छोटी बहनों के समान है और ये बूढ़ी हमारी दादी के समान। यही इन भटके हुए नौजवानों का मुखिया भी लग रहा था। आज हमारे समाज की यही विडम्बना है कि हर मां बाप कोशिश करते हैं कि उनका बच्चा लायक बने, संस्कारी हो, और समाज के उत्थान में भागीदार बने, परन्तु कहां कमी रह जाती है। कुछ लोग शायद यह सोच ही नहीं पाते, बस यही एक सोच की, कमी ही उनकी संतानों में बुराइयां भर देती है और वह भटक जाते हैं। इसमें कहीं तो कोई कमी हमारे जीवन मूल्यों की होगी। ऐसा नहीं है कि समाज में भटके हुए ऐसे लोग ज्यादा है, परन्तु जैसे कि कहावत भी है "एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है" ठीक वैसे ही ये तथाकथित गुण्डा प्रवृत्ति के लोग अपने आस-पास के समाज को दूषित कर देते हैं। वहां की शांत फिजाओं में नफरत का जहर घोलते रहते हैं। ये खुद कभी सुकून भरा जीवन नहीं जी पाते परन्तु किसी को सुकून से जीने भी नहीं देते हैं। बालमन को नकारात्मक प्रवृत्ति जल्दी आकर्षित करती है तब उस समय मां बाप का कर्तव्य होता है। अपने बच्चों पर ध्यान दें परन्तु यही चूक बाद में बच्चों के जीवन को बर्बाद कर देती है, उन्हें चोर, गुण्डा, लुटेरा और ऐसी ही कई उपमाओं के पात्र बना देती है।

वहां उस घनघोर जंगल में दो विचारों का युद्ध था। एक अकेली विधवा जिसने ना जाने कितने कष्टों को झेल कर पाले उसके संस्कारी पुत्र रमेश के विचारों का तो एक उन चार भटके नौजवानों के विचारों का। गालियों की पुनरावृत्ति करते हुए उनमें से एक ने पुनः रमेश को बाहर निकलने को कहा। अबकी बार उसके हाथ का तमंचा भी हिलते हुए ऐसी दर्शा रहा था। रमेश फिर भी बिना डरे बाहर आकर उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था परन्तु अब उसकी हर कोशिश बेकार थी। पीछे से आये दो लड़कों ने रमेश के गले की चेन के साथ गाड़ी की चाभी भी छीन ली। रमेश अभी भी उन्हें भैया के सम्बोधन के साथ ही विनम्र निवेदन ही करता जा रहा था। परन्तु वो निष्ठुर हृदय लोग ऐसे निवेदन की भाषा कहाँ समझते हैं। अगर वह ऐसी भाषा का सार समझते होते तो वो भी सभ्य कहलाते। रमेश से हटकर तीन पीछे की तरफ बैठी लड़कियों और दादी के पैसे और जेवर भी लूट कर चाभी रमेश को देकर जाने लगे, सहसा दो कदम चलते ही वह दरिन्दे ने आपसी वार्तालाप के पश्चात् ही पलट गये। अब उनकी आंखें ही दर्शा रही थी कि उनकी मंशा क्या है हैवानियत उनके चेहरे और उनकी हंसी में झलक रही थी, रमेश डर गया, वह गाड़ी लेकर भागना चाह रहा था कि पीछे से एक ने उसके सर पर जोरदार प्रहार कर दिया, रमेश की आंखों में अंधेरा छाने से वह जमीन पर गिर पड़ा, उन्हीं चारों में से एक ने दादी को भी चाकू मार दिया, दादी एक ही बार में निश्चेत हो गयी थी। अब वो उन बच्चियों को कार से बाहर घसीटने लगे।

दोनों लड़कियां निःसहाय चिल्ला रही थीं। दोनों विकल थीं जिन रमेश भैया का उन्हें सहारा था वो बेहोश था, जिन दादी ने उनका ख्याल रखने का बीड़ा उठाया था वह अब इस दुनिया से जा रही थी। उन चारों ने दो-दो करके दोनों लड़कियों को पकड़ लिया और कार से बाहर खींच लिया। दोनों बच्चियां जोर-जोर से चिल्ला रही थीं रमेश भैया बचाओं..... रमेश की आंखें खुल गईं उसने देखा चारों उन लड़कियों को जंगल की ओर घसीट रहे हैं और उनके करुण क्रन्दन से जंगल भी रोने को हो रहा है, रमेश को अपना वादा याद आया "कि तुम्हारे भैया के रहते तुम्हें कुछ नहीं होगा"..... और रमेश अपना वादा पूरा करने दौड़ पड़ा।

रमेश ने अपना वादा निभाया। दोनों लड़कियों को सुरक्षित बचा लिया। वहां दो लाशें पड़ी थीं और दो लाश बनने के कगार पर था। आज पुलिस जल्दी पहुंची थी। शायद हाइवे था इस कारण या सुबह के समय सड़क खाली होती है इस कारण। रमेश के नौ घाव चाकू के और एक तमंचे से चली गोली लगी थी। इसे सामाजिक विडम्बना कहेंगे या क्या? जो इलाज रमेश जैसे बहादुर सज्जन और जीवन बचाने वाले को मिल रहा था वही इलाज उन दूषित प्रवृत्ति के प्राण घातक लोगों को भी। यही हमारी न्याय व्यवस्था है। सुजाता को पिछले दो घंटों में उसके भाई का तीन फोन आया था पहले दो फोन उसके भाई ने यह बताने के लिए किया था कि वो दोनों दरिन्दें एक एक कर नर्क सिंघार गये थे परन्तु तीसरा फोन, आह! सुजाता का सिन्दूर काला पड़ चुका था। उसकी आंखों से वैसे ही आंसू बह रहे थे। जैसे गंगूताई की आंखों से बह रहे थे। सुजाता ने गंगूताई को कुछ नहीं बताया था परन्तु मां का हृदय सब समझ जाता है। साइंस इसे ही है इन्ट्यूशन या अर्न्तज्ञान कहता है। दो दिन पहले जब बेटे के बारे में सुना तो गंगूताई को बड़ा हार्ट अटैक आया था। तब से सुजाता अपने दो छोटे पुत्रों और मृत शय्या पर पड़े पति की परवाह किये बिना गंगूताई की सेवा में दिन रात एक किये हुए थी। अचानक कमरे का वातावरण एकदम शांत हो गया। डॉ० श्रीवास्तव ने फिर दोहराया गंगूताई कैसा महसूस हो रहा है। अब गंगूताई की आंखें पूर्णतया खुल चुकी थीं परन्तु अश्रु की धारा निकलनी बंद हो गयी थी। अब डॉ० श्रीवास्तव ने वातावरण की शान्ति भंग करते हुए अपने सहायक डॉ० एवं नर्सों को एक साथ कई आदेश दे डाले ये लाओ वो लाओ ये करो वो करो पर नाडी पर हाथ रखते ही डॉ० साहब ने किसी मरीज के विषय में इस्तेमाल होने वाला अपना आखिरी जुमला बोला—आई एम सौरी। अब सुजाता बिलख पड़ी फूट-फूट कर रोने लगी थी।

गंगूताई की अप्रत्याशित मृत्यु से हर कोई हतप्रभ था। कई लोग, कई बातें कर रहे थे पर सुजाता को जो वाक्य सुनाई दे रहा था वो ये था कि नियति तो देखो बेचारी सुजाता की इतिहास ने फिर अपने को दोहराया है एक गंगूताई की जीवन लीला तो समाप्त हो गई पर आज एक नई गंगूताई के जीवन की पुनरावृत्ति हुई है।

- संभव की सीमा को जानने का सबसे उत्तम तरीका है असंभव की सीमा से आगे निकल जाना।
- हमारे निर्माता ने हमारे मस्तिष्क और व्यक्तित्व में असीमित शक्तियाँ और क्षमताएं दी हैं। ईश्वर की प्रार्थना हमें इन शक्तियों को विकसित करने में मदद करती है।

—अब्दुल कलाम

हार के आगे जीत

हम जरा सी असफलता पाते ही निराश हो जाते हैं और यह नहीं समझते कि असफलता केवल एक कौमा है, पूर्ण विराम नहीं। हम फिर से शुरूआत कर सकते हैं, ऐसे महान लोगों की कमी नहीं जो बुरी तरह असफल हुये लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और प्रयत्न करते रहे। फिर उन्होने वह मंजिल पायी जिसके कारण दुनिया आज भी उन्हें याद करती है। ऐसे ही पाँच महान लोगों की कहानी यहां लिखी जा रही है, जिन्होंने अपनी शारीरिक अक्षमता को अपनी मंजिल के आड़े नहीं आने दिया।



एम०एन० ढौडियाल
अधीक्षक सर्वेक्षक

लियोनारडो द विंची:- आपने सही पहचाना मोनालिसा 'के रचयिता' लियोनारडो 'मोनालिसा' को बनाने में 17 साल लगाये। ऐसा उन्होने जानबूझ कर नहीं किया। वे डिस्लेक्सिया और ए०डी०डी० (अंटेनशन डेफिसिट डिस्ऑर्डर) बीमारी से पीड़ित थे। डिस्लेक्सिया के कारण उनका ध्यान किसी एक चीज पर केंद्रित नहीं हो पाता था। इसी कारण वे अपनी 30 पेंटिंग पूरी नहीं कर पाये।

लेकिन उन्होने ठान लिया कि चीजों को समझने में अपनी पूरी शक्ति लगायेंगे। अपने इसी मनोबल के कारण बाद में वे चित्रकार मूर्तिकार, इंजीनियर और शरीर विज्ञान के शिक्षक बनें। यहाँ तक कि उन्होने आज के हवाई जहाज का पहला डिजाइन तैयार किया

विलमा रूडोल्फ:- विलमा रूडोल्फ का जन्म 23 जून, 1940 को सेंट बेतलेहिन टेनेसी में हुआ था। उन्हें बचपन में ही पोलियो और लाल बुखार हो गया था। उनकी बीमारी ने उन्हें पैर में Leg brace पहनने के लिये मजबूर कर दिया। उन्हें बताया गया कि वह जिंदगी में कभी चल नहीं पायेंगी। लेकिन उनकी मां ने कहा कि वह चलेगी, 6 साल की उम्र में रूडोल्फ एक पांव पर उछलने लगी। 8 साल की उम्र में Leg brace के साथ चलना शुरू किया 11 वर्ष की उम्र में उनकी मां ने उन्हें बाहर बास्केट बाल खिलाया, धीरे-धीरे वह एक एथलीट बन गयी, जब वह कक्षा 10 में थी तो वह ऑल अमेरिकन बास्केट बाल के लिये चुनी गयी, लेकिन कालेज में कोच से मिलने के बाद Track and Field में कैरियर बनाने का निश्चय किया।

उन्होने 1956 ओलम्पिक में भाग लिया और 4*100 मीटर रिले रेस में कांस्य पदक जीता। चार वर्ष के बाद स्डोल्फ ने 1960 के ओलम्पिक में तीन स्वर्ण पदक जीते और तीन world रिकार्ड तोड़े। वह 20वीं सदी की महानतम एथलीट बनी एक ही ओलम्पिक में तीन स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली अमेरिकन खिलाड़ी बनी। उनकी Track field में प्रदर्शन ने उन्हें संसार की सबसे तेज दौड़ने वाली महिला के रूप में स्थापित किया।

स्टीफन विलियम हाकिंग:- स्टीफन हाकिंग का जन्म 8 जनवरी 1942 को इंग्लैंड के आक्सफोर्ड में हुआ था। 21 वर्ष की उम्र में वह एक भयानक बीमारी की चपेट में आ गये। जिसके बाद उनके डाक्टरों ने कह दिया था कि वो दो साल से ज्यादा नहीं जी पायेंगे। लेकिन 76 वर्ष जीवित रह कर उन्होने अपने डाक्टरों की भविष्यवाणी को न केवल गलत साबित किया बल्कि विश्व के सबसे बड़े वैज्ञानिक बने उन्हें मोटर न्यूरोन की बीमारी थी। इस बीमारी में मनुष्य का नर्वस सिस्टम धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और शरीर के मूवमेंट रहने और कम्यूनिकेशन क्षमता समाप्त हो जाती है। स्टीफन के दिमाग को छोड़कर उनके शरीर का कोई भी भाग काम नहीं आता था।

उन्होने अपने जीवन में स्पेस-टाइम को लेकर कई शोध किये, उन्होने कई सिद्धान्तों को समझाया जिसमें बिग बैंग थ्योरी, और ब्लैक होल थ्योरी आदि शामिल हैं, उनकी जिदंगी पर आधारित एक फिल्म 'द थ्योरी ऑफ एवरिथिंग' भी रिलीज हुई थी।

हारिन्स का कहना था कि ब्रह्मांड में गुरुत्वाकर्षण जैसी शक्ति है इसलिये वह नई रचनाएं कर सकता है उसके लिये उसे ईश्वर जैसी किसी शक्ति की आवश्यकता नहीं है।

अरुणिमा सिन्हा:- उत्तर प्रदेश के छोटे से शहर अंबेडकरनगर की अरुणिमा सिन्हा आज किसी परिचय की मोहताज नहीं, एक पैर नकली होने के बावजूद दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी को फतह करने वाली विश्व की पहली महिला पर्वतारोही अरुणिमा परिस्थितियों को हराकर उस मुकाम पर पहुँची जहाँ उन्होने खुद को नारी शक्ति के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय स्तर की बालीवाल खिलाड़ी रही अरुणिमा सिन्हा सन् 2011 में लखनऊ से दिल्ली आते समय लुटेरों ने रेलगाड़ी से नीचे फेंक दिया था। दूसरी पटरी पर आ रही रेलगाड़ी की चपेट में आने के कारण उनका एक पैर कट गया था। जिदंगी और मौत के जंग में अरुणिमा की जीत हुई और उनके बाये पैर को कृत्रिम पैर के

सहारे जोड़ दिया गया।

अरुणिमा की हालत को देखकर डाक्टर भी हार मान चुके थे और उन्हें आराम करने की सलाह दे रहे थे। जब परिवार वाले उन्हें विकलांग मान चुके थे। उन्होंने अपने हौसलों में कोई कमी नहीं आने दी। युवाओं और जीवन में किसी भी प्रकार के अभाव के चलते निराशापूर्ण जीवन जी रहे लोगों में उत्साह जगाने के लिये उन्होंने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी को जीतने का लक्ष्य तय किया। उनका कहना था कि इंसान शरीर से नहीं बल्कि मानसिकता से विकलांग होता है।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला बछेंद्री पाल की देखरेख में प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 31 मार्च 2013 को अरुणिमा का मिशन एवरेस्ट शुरू हुआ। 52 दिनों की चढ़ाई के बाद 21 मई को माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराकर वह विश्व की पहली महिला पर्वतारोही बन गईं।

भारत सरकार ने 2015 में उनकी शानदार उपलब्धियों के लिये उन्हें चौथे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्मश्री से नवाजा। खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनकी जीवनी 'बार्न अगेन इन द माउंटेन का लोकार्पण किया।

सुधाचंद्रन:- सुधा चन्द्रन एक प्रसिद्ध भारतीय अभिनेत्री हैं, जिन्होंने भरतनाट्यम् में महारत हासिल की। जब वह तीन साल की थी तभी से उनको नृत्य में दिलचस्पी थी और तभी से वो भरतनाट्यम् की प्रैक्टिस कर रही थी। लेकिन एक दिन जब वह बस में आ रही थी तब उनकी बस का एक्सीडेंट हो गया और उनका एक पैर बुरी तरह से जख्मी हो गया तब तो वह सिर्फ 16 साल की थी। उनके पैर का इन्फेक्शन पूरे शरीर में फैल सकता था, इस वजह से उनके पैर को काटने की सलाह दी, उनका पैर काटा गया और उस जगह पर कृत्रिम पैर लगाया गया।

जब सुधा का पैर चला गया था तब एक वक्त ऐसा भी आया जब वह ठीक से चल भी नहीं पाती थी, वो पूरी तरह से हताश हो गई थी। उनको लगा कि अब वो जिंदगी में कभी नृत्य नहीं कर पायेगी।

नृत्य करने के लिए पैरों का कितना महत्व होता है और यहां सुधा के पास कृत्रिम पैर था पर उनहोने हिम्मत नहीं हारी और कृत्रिम पैरों के सहारे ही 2-3 साल तक प्रैक्टिस की, जब भी वह नृत्य करने की प्रैक्टिस करती थी उनके पैरों से खून निकलना शुरू हो जाता था फिर भी उन्होने अपना हौसला नहीं खोया और जो सूधा अपने पैरों पर खड़ी नहीं रह सकती थी उन्होने भरतनाट्यम् में महारत हासिल की और भारत की सबसे बड़ी भारतनाट्यम् अभिनेत्री में नाम शामिल करवा लिया।

यह जुनून देखकर उनके जीवन पर सन् 1982 में तेलुगु भाषा में एक फिल्म बनायी गई जिसका नाम था 'मयूरी' इस फिल्म में अपना रोल खुद सुधा ने किया था। बाद में सन् 1986 में 'नाचे मयूरी' नाम से यह फिल्म हिन्दी में बनाई गई थी, इसमें भी सुधा ने अपना किरदार स्वयं निभाया था। इस फिल्म के लिए उन्हें सन् 1986 में National Film Award से सम्मानित किया गया था।

प्रकृति प्रेम

नदी झरना और पहाड़ है प्रकृति के तीन बच्चे

मत करो इन्हे तुम दूषित, प्रकृति प्रेमी हो अगर सच्चे।

राहों में पड़े कूड़े-कचरे को देखकर मत करो अनदेखा

साफ कर देना इसे घर का समझ, मत सोचना किसी ने देखा।

स्वच्छ वायु लेना चाहते हैं सब, कोई नहीं चाहता वृक्ष लगाना।

राहों में तुम्हे छॉव भी देगा, बस अपना बच्चा समझ रखना।

स्वच्छता अभियान तो बहाना है चित्र अपना खिचवाना हैं।

चलों चित्र का ही सही बहाना है, कुछ धूल के कण तो हट जाने हैं।

बरसात के मौसम में, गीली मिट्टी की वो खुशबू खो सी गई हैं,

अब तो ना तो वो खुशबू आती हैं, और बरसात भी खो सी गई है।

लगता था पता पहले सारी ऋतुओं का, मौसम अब आया है अब तो लगता हैं ऐसा,

मानों कब धूप और कब बादल आया है।

अरे इन्सान रखों इस प्रकृति का ख्याल, कल सुहावना आना हैं।

सीखो उसे ढलते सूरज से, एक नई उम्मीद से जिसे कल फिर आना हैं।



आत्रेय ज्ञान
वरिष्ठ सर्वेक्षक

मिथिला पेंटिंग

मिथिला पेंटिंग, बिहार के मिथिला क्षेत्र जैसे मधुबना, दरभंगा, सहरसा एवं नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में की जाने वाली एक विश्वप्रसिद्ध चित्रकला है, इसे मधुबनी पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है। प्रारम्भ में यह चित्रकला घरों का दीवारों पर पूजा उत्सव जैसे दुर्गापूजा, दिवाली के समय औरतों द्वारा बनायी जाती थी परंतु अब इन्हें कागजों एवं कपड़ों पर बनाया जाने लगा है।



पंकज कुमार
उप-अधीक्षक सर्वेक्षक

इतिहास:-

ऐसा माना जाता है कि राम-सीता विवाह के समय मिथिला के राजा जनक ने राज्य के प्रतिष्ठित कलाकारों को राज्य का दीवारों को चित्रों से सजाने का आदेश दिया और इस दौरान मिथिला पेंटिंग का जन्म हुआ।

दुनिया को मिथिला पेंटिंग के बारे में तब पता चला जब अंग्रेजों के शासन के समय कुछ ब्रिटिश अधिकारी भूकंप में हुई क्षति का जायजा लेने मधुबनी गये। वहाँ उन्होंने टूटी हुई दीवारों पर अदभुत चित्र बने देखे। उन्हें देखकर आश्चर्य हुआ कि इन पेंटिंगों की पिकासो की पेंटिंग से काफी समानता थी।

विशेषता:-

मिथिला पेंटिंग में चटख रंगों का खूब प्रयोग किया जाता है। इन चित्रों को बनाने के लिए माचिस की तीली या बाँस की कलम का प्रयोग किया जाता है।

राम-विवाह, अर्धनारीश्वर, घनुषभंग, राधा-कृष्ण, कोहबर इत्यादि प्रसिद्ध चित्र है।



उपलब्धि:-

मिथिला पेंटिंग के कलाकारों को उनके योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। जगदम्बा झा को 1975 में गंगा देवी को 1984 में तथा महासुंदरी देवी को 2011 में पद्म श्री पुरस्कार दिया गया। अन्य कई कलाकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।



कोरोना काल में डिजिटल युग का महत्व

हिन्दी भाषी क्षेत्र में यह कहावत चरितार्थ है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। प्यास बुझाने और दैनिक जीवन को सुगमता से जीवन यापन करने के लिए ही कुओं को खोदा गया और तालाबों का निर्माण हुआ।

सन् 2019 के अन्त में कोविड-19 नामक महामारी से सम्पूर्ण विश्व का सामना हुआ। धीरे-धीरे ज्ञात हुआ कि यह बीमारी व्यक्ति को व्यक्ति से सम्पर्क से अथवा स्पर्श करने से हो सकती है। इसे आरम्भ में छुआ-छूत बीमारी की संज्ञा दी गई। परिणामस्वरूप दो गज की दूरी मास्क है जरूरी, हाथ धुलेंगे, बार-बार, हम सब बिल्कुल हैं तैयार इत्यादि नारे प्रचलित हुए।



—विनीत शुक्ला
पुत्र कौशल किशोर शुक्ला,
अधि• सर्वे•

दैनिक जीवन से लेकर सामाजिक, व्यवसायिक और राजनैतिक जीवन इसकी चपेट से बच नहीं सका। सामान्य जनमानस के मन में अनिश्चितता का वातावरण पनप रहा था कि इसी बीच डिजिटल भुगतान, पेटीएम, भीम एप, एटीएम, गूगल-पे ने लेन-देन और धन के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को क्रान्तिकारी तरीके से मोर्चा संभालकर गांवों से शहरों तक सामान्य व्यक्ति के जीवन को पेपर करेंसी (कागज मुद्रा) के मोह और उपयोग से मुक्त करते हुए कागज विहीन भुगतान के तरीके को आत्मसार किया है। ऐसा करने से ग्राहक-व्यापारी के बीच बेहतर सामंजस्य स्थापित होने के साथ-साथ भुगतान की पारदर्शिता को भी इंगित किया है।

शिक्षण अथवा अध्ययन-अध्यापन कार्य में करोड़ों शिक्षक विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। लाखों-करोड़ों युवा अपने व्यवसाय को "वर्क फ्रॉम होम" नीति के माध्यम से सम्पन्न कर रहे हैं ऐसा तकनीक के कारण सम्भव हो सका है जबकि कोरोना जैसे गंभीर रोग के प्रकोप से बचने का एक मात्र और सुरक्षित उपाय "सामाजिक दूरी" ही है।

वर्चुवल सभाओं का आयोजन, वीडियो सम्मेलन, वेविनार, इत्यादि ऐसे माध्यम है जिनकी सहायता से आज बड़ी सरलता से राजनेता से लेकर सचिवालय और सामान्य कर्मचारीगण भी अब इसके इस्तेमाल को लेकर सहज हो चुके हैं। परिणामस्वरूप अनावश्यक भाग-दौड़, संसाधनों का दोहन और फिजूल खर्च से बचा जा सकता है।

लॉकडाउन अवधि ने सड़कों पर लगने वाली अनियंत्रित भीड़ और दुर्घटना, चोरी, हत्या जैसी घटनाओं पर अंकुश लगाया है। ओजोन परत का स्वस्थ होना यह दर्शाता है कि कोरोना काल ने पर्यावरण को धनी बना दिया है। नदियों का जल अब पहले की तुलना में कम दूषित हुए हैं। ईंधन की खपत में भी कमी आयी है इससे कच्चे तेल को विश्व स्तर पर संरक्षित कर पाने में अभूत पूर्व सफलता मिली है। जहां तक कोविड-19 ने सम्पूर्ण जगत को स्वावलंबी, प्रदूषण रहित एवं सजग बनाया है वहीं शिक्षण क्षेत्र की दिशा में भारतीय संदर्भ में इसके दुष्परिणाम भी दिखाई देते हैं। उनकी चर्चा हम इस प्रकार करना चाहते हैं:—

ऑन-लाइन कक्षाएं एवं उनकी कमियाँ:—

भारत ग्रामीण जनों का देश है। आम तौर पर निर्बल, अशिक्षित एवं निर्बल आय वर्ग से आने वाले छात्रों को लैपटॉप, टैबलेट और डेस्कटाप कम्प्यूटर को खरीदकर उपभोग करना कठिन होता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी और मोबाइल टावरों का नेटवर्क उन ग्रामीण इलाकों में उतना मजबूत नहीं होता जिससे कि वे दिन में चार से छः घण्टे लगातार पढ़ सकें। इंटरनेट का खर्च वहन कर पाना भी उनके लिए एक आर्थिक समस्या है। ऐसे में अधिकांश विद्यार्थी या तो समूह में बैठकर शिक्षा ग्रहण करते हैं अथवा वे ऐसी कक्षाएं छोड़ देते हैं। शिक्षक भी ऑन लाइन क्लास संचालित करने में कुशल नहीं है। उनके प्रशिक्षण की प्रबल आवश्यकता है।

डिजिटल कक्षाओं के आयोजन में अपेक्षित सुधार-संभावनाएं

कोरोना काल में जहाँ सामाजिक दूरी बनाकर सभी मंत्रालय एवं विभाग अपने अपने कार्यों का निर्वाहन कर रहे हैं वहीं सभी शिक्षण संस्थाएं भी डिजिटल तकनीक द्वारा छात्रों को ऑडियो विडियो माध्यम से प्रतिदिन अपने विषय का व्याख्यान दे रहे हैं। शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए यह समय चुनौतियों से भरा हुआ है। नियमित कक्षाओं का संचालन कब से शुरू होगा यह अनिश्चितता का विषय बना हुआ है। कुछ छात्रों को इस वर्ष डिग्री लेकर रोजगार के तलाश में जाना है और कुछ ने प्रवेश भी लिया होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि ग्रामीण अंचल से लेकर आधुनिक शहरों तक शिक्षण जगत को भारी नुकसान हुआ है।

सरकारों से पहल की अपील—आर्थिक पिछड़ेपन के कारण ज्यादातर छात्र लैपटाप, डेस्कटॉप, टैबलेट, पी•सी•,

बड़े स्क्रीन वाले मोबाइल फोन को बाजार से खरीद नहीं पाते हैं। इंटरनेट पर लगने वाला डेटा क्रय कर पाना भी आर्थिक स्थिति से जुड़ा हुआ है। अतएव प्रत्येक राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकार से अपेक्षा की जाती है कि उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों को सस्ते एवं रियायती दर पर डिजिटल उपकरण एवं इंटरनेट डेटा उपलब्ध करवाये जाएं ताकि कोरोना और कोरोना जैसी अन्य महामारी के प्रकोपों से युवा पीढ़ी को बचाया जा सके तथा उनके उज्ज्वल भविष्य को भी संवारा जा सके। युवा पीढ़ी देश का भविष्य है आने वाला भारत उन्हीं के हाथों में होगा। अतएव इस कार्य को महान उद्देश्य समझकर शुरु कर देना चाहिए।

क्या आप जानते हैं?

1. ऊँटों की आँखों में पलकों की तीन परत होती है इससे वे रेगिस्तान की धूल से बच पाते हैं।
2. द्वितीय विश्वयुद्ध के समय धातु की इतनी कमी थी कि इस दौरान आस्कर प्लास्टर का बना हुआ था।
3. अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध मोनालिसा की भौहें नहीं थी।
4. आसानी से माफ कर देने का गुण, आपके स्वास्थ्य के लिए सबसे अधिक फायदेमंद है इससे हृदयघात की संभावना कम होती है और कैंसर का फैलाव भी धीमी गति से होता है।
5. ठंडे पानी से नहाना आपकी त्वचा और बालों के लिए गर्म पानी से नहाने की तुलना में अधिक लाभदायक है।
6. अपना मेटाबॉलिज्म बढ़ाना चाहते हो तो अपने भोजन में बादाम, पालक, टंडा पानी, मिर्ची, अॉटमील, काफी, अदरक, दही और ग्रीन टी शामिल करें।
7. सिरदर्द में नींबू के रस को माथे पर बाम की तरह लगाने से आराम होता है।
8. अगर विकीपीडिया की इंग्लिश आपको बहुत कठिन लग रही है तो बाईं तरफ सिम्पल इंग्लिश ऑप्शन पर क्लिक कीजिए।
9. सिगरेट पीने वाले लोग, सिगरेट न पीने वाले और सिगरेट पीना छोड़ चुके लोगों की तुलना में ज्यादा तनाव ग्रस्त होते हैं।
10. बार्बी डॉल का पूरा नाम बारबरा मिलीसेंट रार्बटस है।
11. तितलियों में स्वाद महसूस करने की क्षमता उनके पैरों में होती है।
12. हाथी ऐसा अकेला जानवर है जो कूद नहीं सकता।
13. चॉकलेटस से कुत्तों की जान जा सकती है इसमें थेब्रोमाइन नाम का तत्व कुत्तों के हृदय व नर्वस सिस्टम पर हानिकारण प्रभाव डालता है।
14. हमारे दिमाग में अच्छी यादों से ज्यादा बुरी यादों को याद रखने की क्षमता है।
15. सिर्फ एक घंटे भी यदि हेडफोन का इस्तेमाल कर लिया जाये तो आपके कानों में बैक्टीरिया 700 गुना ज्यादा बढ़ जाते हैं।



—संतोख सिंह
मानचिकार श्रेणी-1

श्लोकः ।। ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।। ऋग्वेद
अर्थः उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

कोरोना काल

कोरोना ने कर दिया आदमी को आदमी से दूर
कसक और मजबूरी तो देखो जमाने की...
कैद है अपनी ही दुनिया में, सब दुनिया से दूर
दहशत भरे माहौल में, अकेले रहने को मजबूर
ना रिश्ते ना नाते ना संगी साथी का साथ
ना सिर पर अब कोई फिराता, दुलार भरा हाथ
शाम की चाय हुई बेस्वाद, कहाँ कोई आता है
मन विचलित, सामाजिक दूरी, इन्सान, इन्सान से सहम जाता है
पार्क, चौपाल भी सन्नाटे से सहमे नजर आते है
आज हाट, बाजार, शहर चौराहे बेजार नजर आते है
स्कूल, कॉलेज सब उदास है, उन्हे भी इन्तजार है
बच्चे आये, पढे, खेले, कलरव करे, बेकरार है
कोई गुनाह नहीं किया, फिर भी मुँह छिपाये, घूमते है
वो हँसी पल जो खो गये है, उन्हे ढूढते है
अब तो बस आस बची है, खुशियाँ फिर आये
फिर गलियाँ, बाजार, गुलजार हो, खिल जाये
फिर बच्चे मिल साथ खेले, अपने पर इठलायें
फिर हम मेहमान नवाजी करे, मेहमान बन कहीं जाये
फिर सूरज में पुरानी चमक हो, खुशियों की रोशनी बिखराये
फिर दोस्तों की महफिल सजे, बेहिचक अपनों के गले लग पाये,
शादी, विवाह तमाम समारोह में पुरानी रौनक लौट आये
हर प्राणी हर जगह पुनः स्वच्छन्द विचरण कर पाये
फिर से वही उमंग लौटे, आस बंधे मेहमानों के आने की
खत्म हो जाये ये कसक और मजबूरी जमाने की
अब सुलह करा दो ईश, जिंदगी की इस उलझन से
बड़ी तलब होती है अब खुलकर मुस्कुराने की.....



अशोक सिंह
पति श्रीमती सीमा सिंह

श्लोकः ॥ येषां न विद्या तपो न दानं, ज्ञानं, न शीलं न गुणों न धर्मः। ते मृत्युलोके भुवि भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

अर्थः जिसके पास विद्या, तप, ज्ञान, शील, गुण और धर्म में से कुछ नहीं वह मनुष्य ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जैसे एक मृग।

अर्थातः जिस मनुष्य ने किसी भी प्रकार से विद्या अध्ययन नहीं किया, न ही उसने व्रत और तप किया, थोड़ा बहुत अन्न-वस्त्र-धन या विद्या दान नहीं दिया, न उसमें किसी भी प्रकार का ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न धर्म है। ऐसे मनुष्य इस धरती पर भार होते हैं। मनुष्य इस धरती पर भार होते हैं। मनुष्य रूप में होते हुए भी पशु के समान जीवन व्यतीत करते हैं।

फिलैटली : शौकों का राजा तथा राजाओं का शौक



श्रीजेश बाबू एन0 टी0
कार्यालय अधीक्षक

सुंदर और उपयोगी वस्तुओं का संग्रह मानव का स्वभाव है। किसी भी वस्तु को संग्रह करने से आनंद और कुछ न कुछ ज्ञान प्राप्त होता है। परंतु डाक टिकटों के संग्रह का मजा ही कुछ और है। हर डाक टिकट किसी न किसी विषय की जानकारी देता है एवं उसके पीछे कोई न कोई कहानी छिपी रहती है। डाक टिकटों का संग्रह विश्व का सबसे लोकप्रिय शौक है। इसके द्वारा हम स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं, साथ ही साथ ज्ञान, मनोरंजन, देश के विकास की चित्रमय कहानी, देशों के इतिहास, भूगोल, संस्कृति, ऐतिहासिक घटनायें, भाषा, पशु-पक्षी, वनस्पतियों तथा लोगों की जीवन शैली आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एक मजेदार और गर्व की बात यह है की भारत का पहला डाक टिकट भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कोलकाता मुद्रण वर्ग में छपा गया था।

किसी विषय में गहरी जानकारी प्राप्त करने के लिए उस विषय के डाक टिकटों का संग्रह करना एक रोचक अनुभव हो सकता है। डाक टिकट संग्रह के शौक के बारे में महत्वपूर्ण बात यह है की यह हर उम्र के लोगों को आकर्षित करता है। यह बच्चों के लिए ज्ञान एवं मनोरंजन, वयस्कों के लिए आनंद एवं तनावमुक्ति, तथा बड़ी उम्र के लोगों के लिए दिमाग को सक्रिय रखने का साधन है। इस तरह डाक टिकट संग्रह सभी पीढ़ियों के लिए एक मनोरंजक एवं प्रेरक अभिरूचि है। इसीलिए इसे “शौकों का राजा तथा राजाओं का शौक” कहा जाता है। इस शौक को अंग्रेजी में “फिलैटली(Philately)” और संग्रह करने वाले को “फिलैटलिस्ट(Philatelist)” कहा जाता है।

फिलैटली की एक शाखा जिसमें मानचित्र वाले डाक टिकटों का संग्रह किया जाता है, को कार्टोफिलैटली(Cartophilately) कहा जाता है। कार्टोफिलैटलिक डाक टिकटों का संग्रह सबसे चुनौतीपूर्ण तथा सबसे रुचिकर माना जाता है।

क्यों न दोस्तों आप भी डाक टिकटों के मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक संग्रह बनायें और इस अनोखे शौक की शुरुआत करें जो आपको उम्र के हर पड़ाव पर आनंदित, क्रियाशील एवं गतिशील रखे। यदि आपको अभी भी इसकी उपयोगिता एवं किसी भी विषय में रूचि पैदा करने की क्षमता पर संदेह हो रहा हो तो आइये हम चलते हैं एक ऐसे सफर पर जिसके बाद आपके सारे संदेह स्वतः ही दूर हो जायेंगे, हम डाक टिकटों के माध्यम से संविधान को जानने का प्रयास करेंगे।

भारत का संविधान - फिलैटलिक नजरिये से



भारतीय संविधान को [संविधान सभा](#) द्वारा [26 नवम्बर, 1949](#) को पारित किया गया।



भारतीय संविधान [26 जनवरी, 1950](#) से प्रभावी हुआ इस दिन को [गणतन्त्र दिवस](#) के रूप में मनाया जाता है भारतीय संविधान लिखने वाली सभा में कुल 299 सदस्य थे जिसके अध्यक्ष डा. राजेंद्र प्रसाद थे। संविधान सभा ने 26 नवम्बर, 1949 को अपना काम पूरा कर लिया और 26 जनवरी, 1950 को यह संविधान लागू हुआ। इसी दिन की याद में हम हर वर्ष 26 जनवरी को [गणतंत्र दिवस](#) के रूप में मनाते हैं। भारतीय संविधान को पूर्ण रूप से तैयार करने में 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन का समय लगा था।



भारतीय संविधान के मुख्य लेखक - डा .भीमराव अम्बेडकर

संविधान सभा के अन्य प्रमुख सदस्य



डा. राजेंद्र प्रसाद(अध्यक्ष)



सी. राजगोपालाचारी



जवाहरलाल नेहरू



कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी



सरदार वल्लभभाई पटेल



अबुल कलाम आज़ाद



श्यामा प्रसाद मुखर्जी



बलवंतराय मेहता



बी. एन. राऊ



राऊ सरोजिनी नायडू



विजयलक्ष्मी पंडित



दुर्गाबाई देशमुख

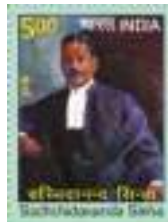


राजकुमारी अमृत कौर

29 अगस्त, 1947 को ड्राफ्टिंग कमेटी का गठन किया गया तथा डा .भीमराव अम्बेडकर इसके अध्यक्ष बने।



9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की प्रथम मुलाकात में



आचार्य कृपलानी ने प्रथम भाषण दिया तथा सच्चिदानंद सिन्हा अस्थायी अध्यक्ष बने



9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की प्रथम मुलाकात में



आचार्य कृपलानी ने प्रथम भाषण दिया तथा सच्चिदानंद सिन्हा अस्थायी अध्यक्ष बने



9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की प्रथम मुलाकात में

सरदार वल्लभभाई पटेल तथा वी. के. कृष्ण मेनन ने देसी रियासतों को भारत में विलय तथा संविधान सभा में अपने सदस्य भेजने के लिए राजी किया।



संविधान की मूल प्रति को प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने हाथ से लिखा तथा शांतिनिकेतन के ब्योहर राममनोहर सिंह एवं नंदलाल बोस ने इसके प्रत्येक पृष्ठ को भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के गौरवमयी चित्रों से सुसज्जित किया। संविधान की प्रथम मुद्रित प्रति को भारतीय सर्वेक्षण विभाग के देहारादून स्थित मुद्रण वर्ग में मुद्रित किया गया था।

प्रत्येक सदस्य ने संविधान की दो प्रतियों, एक हिन्दी और दूसरी अंग्रेज़ी, पर हस्ताक्षर किये।



राष्ट्रीय झण्डा एवं राष्ट्रीय चिन्ह

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी स्वतंत्र भारत के द्वितीय गवर्नर जनरल तथा प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल बने।



डा. राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति तथा जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

भारत के मूल संविधान में आठ अनुसूचियाँ थीं परन्तु वर्तमान में भारतीय संविधान में बारह अनुसूचियाँ हैं। संविधान में नौवीं अनुसूची प्रथम संविधान संशोधन 1951, 10वीं अनुसूची 52वें संविधान संशोधन 1985, 11वीं अनुसूची 73वें संविधान संशोधन 1992 एवं बाहरवीं अनुसूची 74वें संविधान संशोधन 1992 द्वारा सम्मिलित की गयी।

भारत के संविधान की धारा 79 के अनुसार, केन्द्रीय संसद की परिषद में राष्ट्रपति तथा दो सदन है जिन्हें राज्यसभा तथा लोकसभा के नाम से जाना जाता है।

राज्यसभा



लोकसभा



लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष गणेश वसुदेव मावलंकर थे।
न्यायपालिका



अनुच्छेद 124 : उच्चतम न्यायालय



अनुच्छेद 214 : राज्यों के उच्च न्यायालय



अनुच्छेद 21क : शिक्षा का अधिकार

अनुच्छेद 24 : कारखानों में बालश्रम का निषेध



पंचायती राज, निर्वाचन आयोग, भारत की जनगणना



लैंगिक समानता, नारी सशक्तिकरण, मानव अधिकार



उपभोक्ता संरक्षण, भारतीय रिजर्व बैंक, सिविल सेवा



अनुच्छेद 343 : संघ की राजभाषा

अन्य भाषा

तो इस तरह हमने डाक टिकटों के माध्यम से संविधान पर एक हल्की सी दृष्टि डाली। आइये अब कार्टोफिलैटली से जुड़े कुछ डाक टिकटों पर नज़र दौड़ाते हैं।

कार्टोफिलैटलिक डाक टिकट

01 अप्रैल, 1957 को जारी की गयीं भारत के नक्शे वाली कुछ डाक टिकटें





आज़ादी के पश्चात भारतीय सेना ने संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षक सेना के तौर पर विश्व के विभिन्न देशों जैसे कांगो, कोरिया, लाओस, कम्बोडिया, वियतनाम आदि में अपनी सेवाएँ दी। तब भारतीय सेना को विदेश में उपयोग करने हेतु भी भारत के नक्शे वाली कुछ डाक टिकटों का मुद्रण किया गया था। उनमें से कुछ कार्टोफिलैटलिक डाक टिकटों का संग्रह आपके लिए प्रस्तुत है-



भारतीय शांतिरक्षक सेना, कांगो

अंतर्राष्ट्रीय आयोग, कम्बोज



अंतर्राष्ट्रीय आयोग, लाओस



अंतर्राष्ट्रीय आयोग, वियतनाम

कुछ अन्य भारतीय कार्टोफिलैटलिक डाक टिकट:





केंद्रशासित प्रदेश जम्मू व कश्मीर तथा लद्दाख पर मुद्रित विशेष आवरण तथा डाक मोहर:



कुछ अंतर्राष्ट्रीय कार्टोफिलैटलिक डाक टिकट:



अति सर्वत्र वर्जयेत् । अर्थात् अधिकता सभी जगह बुरी होती है ।

कालेन समौषधम् ॥ समय सबसे बेहतर मरहम लगाने वाला है ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥ अर्थात् जहां आपने जन्म लिया है वह स्वर्ग से भी बड़ी भूमि है । उसके प्रति वफादारी जरूरी है ।

दुर्लभं भारते जन्म मानुष्यं तत्र दुर्लभम् ॥ अर्थात् मनुष्यों के लिए भारत में जन्म लेना सबसे दुर्लभ है । भाग्यशाली है जिन्होंने भारत में जन्म लिया ।

नास्ति सत्यसमो धर्मः ॥ अर्थात् सत्य के बराबर कोई दूसरा धर्म नहीं ।

बुद्धिः कर्मानुसारिणी ॥ अर्थात् बुद्धि कर्म का अनुसरण करती है ।

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ॥ बुद्धि तलवार से अधिक शक्तिशाली है ।

भारत के महासर्वेक्षक ले० जनरल गिरीश कुमार (विशिष्ट सेवा मेडल) का रा०
भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में तकनीकी विचार विमर्श



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र की वार्षिक हिन्दी पत्रिका उज्याऊ अंक 3 का विमोचन



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में हिन्दी पखवाडा 2019 का पुरस्कार वितरण



ऑल इंडिया सिविल सर्विसेज बैडमिंटन टूर्नामेंट



सी० जी० ई० डब्ल्यू० सी० सी० कैरम प्रतियोगिता



सी० जी० ई० डब्ल्यू० सी० सी० शतरंज प्रतियोगिता का रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र द्वारा आयोजन



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में संविधान की जानकारी हेतु व्याख्यान का आयोजन



सी० जी० ई० डब्ल्यू० सी० सी० क्रिकेट प्रतियोगिता का रा० भू-स्थानिक आंकडा
केन्द्र द्वारा आयोजन



रा० भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में स्वतंत्रता दिवस आयोजन एवं वृक्षारोपण



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में स्वतंत्रता दिवस आयोजन एवं वृक्षारोपण



39 आई0 एन0 सी0 ए0 मीट, दिसम्बर



39 आई० एन० सी० ए० मीट, दिसम्बर 2019



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र, द्वारा आसन बैराज में पिकनिक का आयोजन



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन



रा० भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र में गणतंत्र दिवस का



सी० जी० ई० डब्ल्यू० सी० सी० टेबल टेनिस प्रतियोगिता का रा०
भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र द्वारा आयोजन





अपर महासर्वेक्षक के द्वारा नराकास की पत्रिका में लेखन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती सीमा सिंह, वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन



संविधान जानकारी के तत्वाधान में आयोजित परीक्षा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती सीमा सिंह, वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन



संविधान जानकारी के तत्वाधान में आयोजित परीक्षा में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करती श्रीमती ममता तोमर, वरिष्ठ मुद्रण तकनीशियन

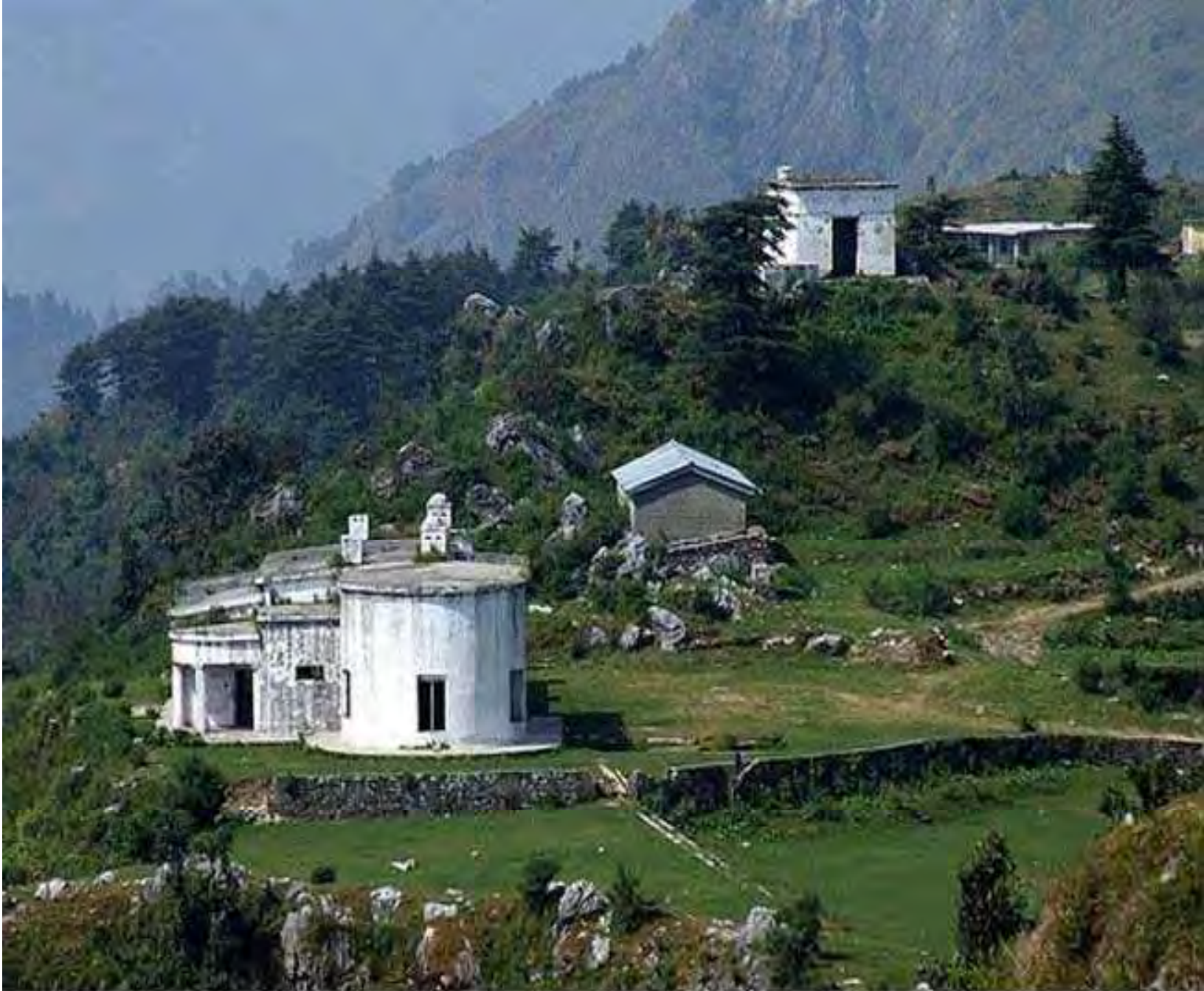


संविधान जानकारी के तत्वाधान में आयोजित परीक्षा में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते श्री मनोज चौधरी, मानचित्रकार, श्रेणी-1



केन्द्रीय सर्तकता आयोग द्वारा ईमानदारी व सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा लेते अधिकारी व कर्मचारी





कर्नल सर जार्ज एवरेस्ट वेल्स सर्वेक्षक और भौगोलिक थे इसके साथ ही वह सन् 1830 सन् 1843 तक भारत के महासर्वेक्षक रहे। माउंट एवरेस्ट का नाम भी जियोग्राफर जार्ज एवरेस्ट के नाम पर रखा गया एवरेस्ट की खोज करने वाले सर जार्ज एवरेस्ट का घर मसूरी में पार्क रोड पर स्थित है, जो गाँधी चौक से लगभग 6 किलोमीटर दूर है। सर जार्ज एवरेस्ट का घर और प्रयोगशाला का निर्माण सन् 1832 में हुआ था सर जार्ज एवरेस्ट का यह घर अब आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया की देख रेख में है, सर जार्ज एवरेस्ट के पास ग्रेट ट्रिगनोमैट्रिकल सर्वे के अधीक्षक का दायित्व भी था, जिसे उन्होंने जिस परिशुद्धता के साथ अंजाम दिया उसकी आज भी मिसाल दी जाती है।